शिक्षक दिवस

समाजकेँ सही दिशा देबामे शिक्षकक प्रमुख भूमिका होइत अछि। ई राष्ट्रक भावी नागरिक अर्थात् नेना लोकनिक व्यक्तित्व बनयबाक संग-संग हुनका सभकेँ शिक्षित सेहो करैत छथि। तेँ शिक्षकगण द्वारा कयल गेल श्रेष्ठ कार्य सभहिक मूल्यांकन कऽ हुनका सम्मानित करबाक दिन शिक्षक दिवस कहबैत अछि। ओना डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जे कि 1962सँ 1967 धरि भारतक राष्ट्रपति सेहो रहलाह, हुनक जन्मदिनक अवसरपर शिक्षक दिवस मनाओल जाइत अछि। ओ संस्कृतज्ञ, दार्शनिक हेबाक संग शिक्षाशास्त्री सेहो छलाह। राष्ट्रपति बनबासँ पूर्व ओ शिक्षा क्षेत्रमेँ संलग्न छलाह। 1939सँ 1948 धरि ओ विश्वविख्यात काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक उपकुलपति पदपर रहलाह। राष्ट्रपति बनलाक बाद जखन हुनक जन्मदिनकेँ सार्वजनिक रूपसँ आयोजित करबाक योजना बनल तँ ओ जीवनक अधिकांश समय शिक्षक रहबाक कारणेँ एहि दिनकेँ शिक्षक लोकनिकेँ सम्मानित करबाक हेतु शिक्षक दिवस मनयबाक बात कहलनि। ओही समयसँ प्रतिवर्ष ई दिन शिक्षक दिवसकेर रूपमे मनाओल जाइत अछि।

शिक्षक दिवसक अवसरपर राज्य सरकार ओ भारत सरकार द्वारा शिक्षणक प्रति समर्पित शिक्षक लोकनिकेँ सम्मानित कयल जाइत छनि। शिक्षक राष्ट्रनिर्माणमे सहायक सिद्ध होइत छथि, संगहि राष्ट्रीय संस्कृतिक संरक्षक सेहो थिकाह। ओ छात्रगणकेँ सुसंस्कार तँ दैते छथि, हुनक अज्ञानता रूपी अंधकारकेँ दूर कऽ हुनका देशक श्रेष्ठ नागरिक बनयबाक दायित्वक निर्वहन सेहो करैत छथि। शिक्षक देशक बालक लोकनिकेँ ने मात्र साक्षर करैत छथि अपितु अपन उपदेश द्वारा ओकर ज्ञानक तेसर आँखि सेहो खोलैत छथि। ओ नेना सभमे हित-अहित, नीक-अधलाह विचारबाक शक्ति उत्पन्न करैत छथि। एहि तरहेँ राष्ट्रक समग्र विकासमे शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करैत छथि।

शिक्षक ओहि दीप सदृश थिकाह जे अपन ज्ञान-ज्योतिसँ बालक लोकनिकेँ प्रकाशमान करैत छथि। महर्षि अरविन्द अपन एक पोथी जकर नाम 'महर्षि अरविन्द के विचार, छैक। ओहिमे शिक्षकक संबंधमे लिखने छथि - 'अध्यापक राष्ट्रक संस्कृतिक माली होइत छथि। ओ संस्कारक जड़िमे खाद दैत छथि। अपन श्रमसँ ओकरा सींचि-सींचि कऽ महाप्राण शक्ति बनबैत छथि।' इटलीक एक उपन्यासकार शिक्षकक विषयमे कहने छथि जे शिक्षक ओहि मोमबत्तीक सदृश अछि जे स्वयं जरिकेँ दोसराकेँ इजोत दैत अछि। संत कबीर तँ गुरूकेँ भगवानोसँ पैघ मानने छथि। ओ गुरूकेँ ईश्वरसँ श्रेष्ठ मानैत कहने छथि-

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पाय।

बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियो मिलाय।।

शिक्षककेँ आदर देब, समाज आ राष्ट्रमे हुनक कीर्तिकेँ विस्तार देब केन्द्र एवं राज्य सरकारक कर्त्तव्य नहि, दायित्व सेहो छैक। एहि दायित्वकेँ पूरा करबाक शिक्षक दिवस एक सर्वोत्तम दिन अछि।

गुरूसँ आशीर्वाद लेनाय भारतवर्षक अत्यन्त प्राचीन परिपाटी अछि। आषाढ़ माहमे अबइवला पूर्णिमाकेँ गुरू

पूर्णिमा वा व्यास पूर्णिमा नाम एही निमित्त देल गेल छै। स्कूल-कओलेजक अतिरिक्त सरकार दिससँ सेहो एहि दिन समारोह आयोजित कयल जाइत अछि। दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित एक पैघ समारोहमे राजधानीक स्कूल सभसँ चयनित श्रेष्ठ शिक्षक लोकनिकेँ सम्मानित कयल जाइत छनि। एकर अतिरिक्त स्थानीय निकाय जेना दिल्ली नगर निगम, नव दिल्ली नगर पालिका परिषद्, दिल्ली छावनी परिषद् द्वारा सेहो समारोह आयोजित कऽ अपना अधीन अबइवला स्कूलक श्रेष्ठ शिक्षकगणकेँ सम्मानित कयल जाइत अछि।

□□□

मदर टेरेसा

यूगोस्लावियाक स्कोपजे नामक एक छोट-सन नगरमे मदर टेरेसाक जन्म 26 अगस्त, 1910 कँ भेल छलन्हि। हुनक पिता एक भवन निर्माता छलाह, नाम रहन्हि अल्बेनियन। टैरेसा बाल्यकालमे एग्नेस बोहाझिउ नामसँ बजाओल जाइत छलि। हुनक माता-पिता धार्मिक विचारक छलथिन्ह। बारह बरखक अल्पायुमे मदर टेरेसा अपन जिनगीक उद्देश्य निश्चित कए लेने छलि। मानव-प्रेम एकटा एहन सर्वोत्तम भावना अछि जे ओकरा वास्तवमे मनुक्ख बनबैत छैक। मानवताक प्रति प्रेमकेँ देश, जाति वा धर्म सदृश संकुचित परिधिमे नहि बान्हिल जाए सकैत अछि। विश्वमे मानवक नि:स्वार्थ भावसँ सेवा कएनिहार अनेक विभूति लोकनिमे मदर टेरेसा सर्वोच्च छलि। हुनका ममता, प्रेम, करुणा आ सेवाक प्रतिमूर्ति कहल जाइन्हि तँ कोनो अत्युक्ति नहि होएत।

अठारह बरखक आयुमे ओ नन बनबाक निर्णय लए ललन्हि। एहि लेल ओ आयरलैंड जाकेँ लोरेटो नन लोकनिक केन्द्रमे सम्मिलित भए गेलि। ओतएसँ हुनका भारत पठाओल गेलन्हि। 1929मे मदर टेरेसा लोरेटी एटेली स्कूलमे अध्यापिका बनबाक लेल कलकता पहुँचलि। एतय आबि ओ अध्यापिकाक रूपमे सेवाकार्य आरम्भ कयलनि। अपन योग्यता, कार्यनिष्ठा आ सेवाभावक कारण किछुए दिनक उपरान्त हुनका ओतुक्का प्रधानाध्यापिका बनाऽ देल गेल। टेरेसाकेँ ई पद पाबिकेँ संतोष नहि भेटल। 10 दिसम्बर, 1946 कँ जखन ओ रेलसँ दार्जिलिंग जाय रहल छलि तखन हुनक अन्तरात्मासँ एकटा आवाज आएल जे स्कूल छोड़ि हुनका गरीब लोकनिक बीच रहि सेवा करबाक चाही। ओ विद्यालयक काज छोड़ि देलनि। 1950मे मिशनरीज ऑफ चैरिटीक स्थापना कयलनि। एकर उपरान्त नील कोखला उज्जर साड़ी पहीरि पीड़ित लोकनिक सेवा करबाक लेल कर्मक्षेत्रमे कूदि गेलि।

एहिसँ पूर्व मदर टेरेसा 1948मे कोलकाता स्थित एक झुग्गी बस्तीमे रहनिहार नेना लोकनिक हेतु विद्यालय खोललनि। एकर किछु दिनक बाद काली मंदिर लग 'निर्मल हृदय' नामसँ एकटा धर्मशालाक स्थापना कयलनि। ई धर्मशाला मात्र असहाय लोक सभहिक लेल छल। मदर टेरेसा अपन सहयोगी सिस्टर लोकनिक संग सड़कक कात एवं गली-कुच्चीमे पड़ल दुखित व्यक्तिकेँ उठाकेँ 'निर्मल हृदय' लऽ जाथि जतऽ हुनका सभक नि:शुल्क उपचार होन्हि। उल्लेखनीय थीक जे ओ अपन नाम 16म शताब्दीमे संत टेरेसाक नामसँ विख्यात भेल एक ननकेर नामपर टेरेसा राखि लेने छलि।

आरम्भमे मदर टेरेसा क्रिक लेनेमे रहैत छलि,बादमे आबिकेँ ओ सरकुलर रोडमे रहय लगलथि। एहिठाम जाहि मकानमे ओ रहैत छलि से आइ विश्वभरिमे 'मदर हाउस' क नामसँ जानल जाइत अछि। 1952मे स्थापित 'निर्मल हृदय' केन्द्र आइ विशाल आकार ग्रहण कऽ लेलक अछि। संसार भरिक प्राय: 120 देशमे एहि संस्थाक शाखा सभ कार्यरत छैक। एहि संस्थाक अन्तर्गत सम्प्रति 169 शिक्षण संस्था, 1369 उपचार केन्द्र एवं 755 आश्रय गृह संचालित अछि।

मदर टेरेसाक व्यक्तित्व अत्यन्त सहनशील, असाधारण आ करूणामय छल। हुनक मनमे रोगी, वृद्ध, भूखल, नांगट एवं निर्धन लोकनिक प्रति अत्यधिक ममता छलनि। ओ अपन जिनगीक पचास बरख हुनके सभहिक सेवा-सुश्रुषामे व्यतीत कए देलनि। टुगर आ विकलांग नेना लोकनिक जीवनकेँ प्रकाशवान बनेबा लेल ओ आजीवन प्रयास कयलनि।

मदर टेरेसा हृदय रोगसँ पीड़ित छलि। 1989सँ 'पेसमेकर'क बलेँ हुनक श्वास चलि रहल छल। अन्ततः सितंबर 1997मे ओ परलोक लेल प्रस्थान कए गेलि। पीड़ित लोकनिक तन-मनसँ सेवा कयनिहारि टेरेसा आइ हमरा सभहिक बीच नहि छथि मुदा हमरा लोकनिकेँ हुनक देखाओल बाटपर चलैत टुगर, असहाय आओर दुखितक सेवा करबाक संकल्प लेबाक चाही।

□□□

महावीर स्वामी

धर्म-प्रधान भारतक माटिमे समय-समयपर अनेक धर्माचार्य लोकनिक प्रादुर्भाव भेल। एकर प्रधान कारण छल एहिठाम प्रचलित धार्मिक कर्मकांडक विकृत रूप। देशमे पशु सहित नर-बलिक प्रथा अनेक धर्ममे विद्यमान छल। धर्मक नामपर नाना प्रकारक ढोंग समाजमे व्याप्त छल। एहने-सन स्थितिमे राष्ट्रक पावन भूमिपर कैकटा महापुरुष लोकनि जन्म लेलनि।

धर्मक स्थापना आ सज्जन व्यक्तिक सुरक्षा लेल महावीर स्वामीक जन्म ओहि कालमे भेल जखन देशमे यज्ञक महत्त्व बढ़ए लागल छल। समाजमे मात्र ब्राह्मण लोकनिक प्रतिष्ठा निरन्तर बढ़ैत जा रहल छलनि। ब्राह्मण अपना सोझाँ अन्य जातिकेँ न्यून बुझैत रहथि। तेँ ओ सभ प्रताड़ित अनुभव करैत छल। यज्ञमे पशुक बलि देल जाइत छलैक। एही कालमे महावीर स्वामी धर्मक सुच्चा स्वरूपकेँ बुझयबाक निमित्त आ परस्पर भेदभाव मिटएबा लेल भारत-भूमिपर अवतरति भेलाह।

महावीर स्वामीक जन्म आइसँ करीब अढ़ाय हजार वर्ष पूर्व चैत्रसुदी त्रयोदशीक दिन बिहार राज्यक वैशालीक निकट कुण्डग्राममे लिच्छवी वंशीय क्षत्रिय राजा सिद्धार्थक घरमे भेल। हुनक पिता सिद्धार्थ वैशालीक शासक छलाह। हुनक माताक नाम त्रिशला देवी छलन्हि। पुत्रकेँ जन्म देलासँ पूर्व त्रिशला देवी कैकटा बड़ शुभ स्वप्न देखने छलि। ओहि स्वप्न सभकेँ देखि हुनका विश्वास छलनि जे जाहि पुत्रकेँ हम जन्म देलहुँ अछि जे महान् गुण सभसँ युक्त होयत आ ओकर यश विश्वभरिमे पसरत। महावीर स्वामी दुआरा कयल गेल कार्य सभसँ मायक उक्त धारणा पूर्ण भेलनि। राजा सिद्धार्थ पुत्ररत्नक प्राप्ति पर अत्यधिक प्रसन्न भेलाह। एहि अवसर पर ओ खूब उत्साहसँ उत्सव आयोजित कयलनि आ प्रजाकेँ नाना प्रकारक सुविधा प्रदान कयलनि। ओहि लिच्छवी वंशक बड्ड ख्याति छलै। पुत्र भेलाक बाद सिद्धार्थक प्रभाव अओर बढ़ि गेल। एहि कारणेँ महावीरक नाम 'वर्धमान' राखल गेल।

बाल्यावस्थामे महावीर स्वामी 'वर्धमान' नामसँ बजाओल जाइत रहला। किशोरावस्थामे एक पैघ साँप तथा मदमस्त हाथीकेँ अपन वशमेकऽ लेलासँ हनुका 'महावीर'क संज्ञा भेटलनि। परिवारमे कथूक अभाव नहि छल, सुखक सबटा सामग्री सहजतासँ उपलब्ध छलनि मुदा ई सुख हुनका काँट सदृश लगनि। महावीर सदति सृष्टिक असारता पर विचारमग्न रहय लगलाह।

हुनक विवाह एक राजकुमारीसँ कऽ देल गेल। तथापि ओ पत्नीक प्रेमाकर्षणमे नहि बन्हेला, अपितु हुनक मोन सांसारिकतासँ उचटैत चलि गेलनि। पिताक मृत्युक पश्चात् हुनक वैरागी मन अओर खिन्न भऽ उठल एवं संसारसँ वैराग्य लेबाक निश्चय कऽ लेलनि। जेठ भाए नन्दिवर्धनक आग्रहपर ओ दू बरख अओर गृहस्थ जीवन बितओलनि। एहि दूइ बरखमे ओ भरि इच्छा दान-पुण्य कयलनि। तीसम वयसक उपरान्त ओ परिवार एवं संबंधी लोकनिक माया-मोह छोड़ि साधु बनि गेलाह। एकांत आ शांत स्थानमे आत्मशुद्धिक लेल ओ तपमे लीन भऽ गेलाह। बारह बरख धरि तपस्या कयलाक बाद हुनका परम ज्ञानक प्राप्ति भेलनि।

एकरा बाद ओ जनताकेँ धर्मक स्वरूप बुझायब आरंभ कऽ देलनि। ओ अपन पहिल उपदेश राजगीरक निकट विपुलाचल पर्वत पर देलनि। शनैः शनैः हुनक उपदेशक प्रभाव सम्पूर्ण देशमे पसरि गेल। हुनक शिक्षासँ प्रभावित भऽ अनुयायी लोकनिक संख्या बढ़ैत गेल आ हुनक सिद्धान्त एवं मतक प्रचार सेहो होइत गेल।

महावीर स्वामी मोक्षकेँ जीवनक एकमात्र लक्ष्य मानलनि। अपन ज्ञान-किरण द्वारा ओ जैन धर्मक प्रवर्तन कयलनि। एहि धर्मक पाँचटा मुख्य सिद्धांत अछि-सत्य, अहिंसा, चोरी नहि करब, आवश्यकतासँ अधिक संग्रह नहि करब आ जीवनक शुद्धीकरण हुनक कहब छल जे एहि पाँच सिद्धान्त पर चलिकेँ मनुक्ख मोक्ष वा निर्वाण पाबि सकैत अछि। ओ सभकेँ उक्त मार्गपर चलबाक ज्ञानोपदेश देलनि।

महावीर स्वामीक कहब छलनि जे जाति-पाँजिसँ ने क्यो श्रेष्ठ आ महान् बनैत अछि ने जीवनमे ओकर स्थायी मूल्ये होइत छैक। सभहिक आत्माकेँ अपन आत्मा सदृश बूझक चाही, यैह मनुक्खता थिक। भगवान महावीर स्वामी जैन धर्मक चौबीसम तीर्थंकरक रूपमे आइयो सश्रद्धा आ ससम्मान पूज्य एवं आराध्य थिकाह। हुनक मृत्यु 72 बरखक आयुमे कार्तिक मासक अमावस्याकेँ पावापुर नामक स्थान पर भेलनि।

□□□

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)

स्वतंत्रता दिवस भारतवर्षक स्वाधीनताक जन्म दिवस थिक। 1947मे 15 अगस्तक दिन देश अंग्रेजक गुलामीसँ मुक्त भेल छल। एहिसँ पूर्व प्रायः दू सय बरख धरि अंगरेज भारतमे राज्य कयलक। कूटनीतिमे निपुण अंगरेज सभ विलासी, भोगी आ सत्ता पयबा लेल पारिवारिक ओझौटमे ओझरायल मुगल लोकनिकेँ खेहाड़ि अपन शासन भारतमे स्थापित कयलक। ब्रिटिश शासनकालमे वैज्ञानिक उन्नतिसँ देश प्रगति-पथपर अग्रसर भेल। श्रीलंका आ वर्माकेँ भारतसँ पृथक् कऽ स्वतंत्र राष्ट्रक रूपमे स्थापित कयल गेल। अंगरेज बंगालकेँ सेहो दू भागमे विभाजित करबाक प्रयासमे छल मुदा जनमत विरोधक कारणेँ एहिमे ओकरा सफलता नहि भेटलैक। पन्द्रह अगस्तकेँ दिल्लीक लालकिलापर पहिल बेर यूनियन जैककेर स्थानपर सत्य एवं अहिंसाक प्रतीक तिरंगा झंडा फहराओल गेल छल।

स्वतंत्रता दिवस प्रतिवर्ष प्रत्येक नगरमे बड़ उत्साहक संग मनाओल जाइत अछि। विद्यालय सभमे छात्रगण सोल्लास एहि राष्ट्रीय पाबनिकेँ मनबैत छथि। हमरो विद्यालयमे आन बरखक भाँति एहू बेर ई पर्व बड़ हर्षक संग मनाओल गेल। विद्यालयक सभ छात्र प्रांगणमे एकत्रित भेलाह। ओना कार्यक्रम आरम्भ भेलाक बादो विद्यार्थी लोकनि आबि रहल छलाह। उपस्थिति पूरा भेला सन्ताँ मचक संचालन कयनिहार शिक्षक कार्यक्रममे भाग लेनिहार छात्र-समूहकेँ आगाँ अएबा लेल कहलनि। शिक्षक महोदयक एहि उद्घोषणाक उपरान्त कार्यक्रमक लेल चयनित छात्र सभसँ अलग भऽ गेलाह।

एकर पश्चात् प्रधानाचार्य प्रभात फेरीमे चलक लेल विद्यार्थी लोकनिकेँ संकेत देलनि। विद्यालयक छात्रगण तीन-तीन केर पाँती बनाकेँ सड़कपर चलय लगलाह। सभसँ आगू महक छात्रक हाथमे तिरंगा झंडा छलैक, तकरा पाछाँ विद्यार्थी सभ पाँतीमे चलि रहल छल। सभ विद्यार्थी देशभक्तिसँ ओतप्रोत गीतक गायन करैत जाय रहल छलाह, बीच-बीचमे हठात् 'भारतमाताक जय', 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद-जिन्दाबाद'क नारा जोरगर अवाजमे लगाऽ रहल छलाह। एहि प्रकारेँ प्रभात फेरी नगरक प्रमुख चौबट्टीसँ होइत जिलाधीशक आवासक सोझासँ बहार भेल। अन्तमे प्रभातफेरी विद्यालय परिसरमे आबि बिलमल। ओतय ध्वजारोहणक सबटा ओरिआओन कऽ लेल गेल छल।

ठीक आठ बजे विद्यालयक प्राचार्य ध्वजारोहण कयलनि। एहि अवसरपर उपस्थित सब छात्र दुआरा तिरंगाकेँ सलामी देल गेल। एहि आयोजन पर राज्यक शिक्षामंत्री एवं शिक्षा अधिकारी दुआरा पठाओल गेल संदेश पढ़िकेँ सुनाओल गेल। एकरा बाद प्रारम्भ भेल खेल आ सांस्कृतिक कार्यक्रम। सांस्कृतिक कार्यक्रमक अन्तर्गत जलियावाला बागपर आधारित एकगोट नाटकक मंचन कयल गेल। एकर अतिरिक्त किछु छात्र देशभक्तिसँ सम्बद्ध अपन रचना सुनओलक। कार्यक्रमक अन्तमे विभिन्न क्षेत्रमे उत्कृष्ट रहल छात्र लोकनिकेँ प्रमुख समाजसेवी एवं स्वतंत्रता सेनानी श्री राजाराम प्रसादक हाथेँ सम्मानित कयल गेल। समारोहक अन्त छात्रगणक मध्य मधुरक वितरणसँ भेल।

राष्ट्रीय स्तर पर एहि पर्वक आयोजन दिल्लीक लालकिलापर होइत अछि। एहि समारोहकेँ देखबाक लेल अपार जनसमूह उमड़ि पड़ैत छै। प्रधानमंत्रीक आगमनक संगहि कार्यक्रमक शुभारंभ भऽ जाइत अछि। सेनाक तीनू अंग जल, थल आ नौ सेनाक टुकड़ी तथा एन.सी.सी. क कैडेट सलामी दऽ प्रधानमंत्रीक स्वागत करैत अछि। प्रधानमंत्री लाल किलाक प्राचीर पर निर्मित मंचपर पहुँचिकेँ जनताक अभिनन्दन स्वीकार करैत छथि। अओर राष्ट्रीय ध्वज फहरबैत छथि। ध्वजारोहण कालमे राष्ट्रध्वजकेँ सेना द्वारा एकतीस तोपक सलामी देल जाइत छै। तत्पश्चात् प्रधानमंत्री राष्ट्रक जनताकेँ धन्यवाद दैत छथि। संगहि राष्ट्रक भावी योजना सभपर सेहो प्रकाश दैत छथि। पछिला वर्षक पन्द्रह अगस्तसँ लऽ एहि वर्ष धरिक घटित घटनाक चर्चा करैत छथि। भाषणक समापनमे ओ तीन बेर 'जय हिन्द' क घोष करैत छथि। जकरा ओहिठाम उपस्थित जनसमूह जोरगर स्वरमे दोहरबैत अछि। एहि अवसरपर लालकिला नवकनिआ जकाँ सुसज्जित रहैत छैक।

□□□

छात्र आ अनुशासन

आधुनिक युगमे छात्र जीवनक महत्त्व सर्वोपरि अछि। एहि जीवनक उपयोग एवं सफलतापर भावी जीवन निर्भर करैत अछि। इएह अवधि ओ आधारशिला थिक जाहि पर भविष्यक सुख-सुविधाक इमारत ठाढ़ कयल जाय सकैत अछि। जँ मनोयोगसँ, तपस्याक भावनासँ ईमानदारीपूर्वक ई जीवन ईटकेँ राखल जायत आ जेहन नीक बनाओल जाएत तेहन भवन होएत। ई छात्र पर स्वयं निर्भर करैत छनि जे ओ खोपड़ी, खोली आ कि अट्टालिका निर्माण करय चाहैत छथि। जे एहि जीवनक उचित ढंगसँ सदुपयोग करताह दैनिक जीवन स्वत: सफल भऽ जेतनि। आ एहि जीवनकेँ सफल बनेबाक लेल अनुशासन परम आवश्यक अछि। अनुशासन छात्र जीवनक रीढ़ थिक आ सहजहि अनुमान करबा योग्य अछि जे रीढ़ जेहन निर्बल अथवा सबल रहतैक मानवक शरीर तेहने निर्बल वा सबल हेतैक।

सम्बन्धित नियमक पालन अनुशासन कहबैत अछि। नियम उपनियमक शृंखलामे बान्हल जीवनकेँ अनुशासित जीवन कहि सकैत छी। अनुशासनक अर्थ भेल वैयक्तिक सामाजिक एवं प्रशासनिक नियमक पालन करब। नियम एवं शृंखला प्राकृतिक विधान थिक। एक दोसरसँ बद्ध राखयबला सूत्र नियम शृंखलाक ताग थिक। प्रकृति सेहो ओहि अदृश्य सूत्रधारक अनुशासनसँ अनुशासित अछि। तेँ ने जाड़मे धान आ ग्रीष्ममे आम होइत छैक। दिनहिमे सूर्य आ रातिहिमे चन्द्रमा ओहि विराटक प्रतिदिन आरती करैत छथि। सन्ध्या होइतहि राति रानी असंख्य तरेगनकेँ छिड़िआ दैत छथि आ भोर होइते नुकाय रहैत छथि। पृथ्वी अपन चक्रपर अविराम गतिएँ घुमैत रहैत अछि। सब की थिक? नियन्ताक अनुशासनमे आबद्ध प्रकृतिक कार्यकलाप।

मनुष्य सेहो प्राकृतिक कार्यकलाप एवं ओकर प्रतिक्रियाक एकटा फल थिक। तेँ मानव जीवनमे सेहो अनुशासनक बड़ महत्त्व छैक। अनुशासन सफल जीवनक कुंजी थिक। जखन कोनहु स्तरसँ अनुशासन भंग हैत, उच्छृंखलता आ विरूपता पसरि जायत। जनजीवन अस्त-व्यस्त भऽ जायत। परिवार, समाज एवं राष्ट्रक स्वरूप सुन्दर आ सुव्यवस्थित रखबाक लेल माता-पिता संतानपर, शिक्षक छात्रपर, अफसर सैनिकपर आ सरकार अपन कर्मचारीपर अनुशासनक द्वारा नियंत्रण राखि सकैत अछि। अनुशासन समाजक धुरी थिक। आ तेँ वृद्ध पिताक वक्र भौंह देखिते युवा आ शक्तिशाली पुत्र सहमि जाइत छैक। माय-सासुक कड़गर रुखि बेटी-पुतोहुकेँ घरमे नुकाकेँ बैसबाक हेतु बाध्य कऽ दैत छैक। दुबरो-पातर शिक्षकक एकटा फटकार वर्गक समस्त छात्र-छात्राकेँ स्थिर भऽकेँ बैसा दैत छैक। कमांडरक एक स्वरपर सैनिक प्राणोत्सर्ग करबाक हेतु उद्यत भऽ जाइत छैक। की ई बलसँ होइत छैक? ई मात्र अनुशासनक भावनासँ।

ओना तँ जीवनक हर क्षणमे अनुशासनक महत्त्व प्रत्येक व्यक्तिकेँ छैक किन्तु आइ छात्र लोकनिक अनुशासनहीनता पारिवारिक असामाजिक सीमासँ टपि राष्ट्रीय रूप धारण कऽ लेने अछि। देशव्यापी भऽ रहल अछि। कखनो काल तँ इएह बुझना जाइत अछि जे शिक्षकक ई समस्त व्यापार जेना पढ़ाई, पोथी, परीक्षा, परीक्षाफल आदि सभ मिथ्या आडम्बर थिक। ई जटिल समस्या देशकेँ क्षुब्ध, समाजशास्त्रीकेँ समाधान हेतु आकुल आ शिक्षा शास्त्री,

चिन्तकेँ, हतप्रभ, नेतागणकेँ विस्मित आ नागरिक जीवनकेँ त्रस्त, क्षुब्ध एवं अशान्त कएने अछि। एकर समाधान हेतु कतेक समितिक गठन होइत अछि। छात्रगणक अनुशासनहीनताक बाढ़ि वेगसँ बढ़ि रहल अछि। ई सबहिक हेतु अत्यन्त दु:खप्रद एवं भयप्रद स्थिति अछि।

छात्र लोकनि युवा थिकाह। उत्साही छथि। हुनकामे अपार शक्ति छनि। अभाव छनि मात्र विवेकक। ओ लोकनि विवेकशील कम होइत छथि। जलकेँ जँ उचित दिशा नहि देल जेतैक तँ ओहिमे बाढ़ि अयबे करतैक चाहे ओहिसँ जे अस्तव्यस्तता वा प्रलय किंवा विनाश होइक। ओकरामे शक्ति छैक, ओकरा सही दिशा चाहबे करी। सएह दशा छात्रक छनि। हुनका सोझाँ कोनो ठोस आ रचनात्मक कार्यक अभाव छनि। ओ अपन भविष्यकेँ अन्धकारपूर्ण बुझैत छथि। समय-समयपर राजनीतिक नेतागण सेहो अपन क्षुद्र स्वार्थक पूर्तिक हेतु ओही अपार शक्तिक दुरूपयोग कए लैत छथि। जहिना घरमे बान्हल सरिता कखनोकेँ विशृंखल भऽ उठैत अछि तहिना अदम्य उत्साह आ सामर्थ्यसँ युक्त छात्र वेगवती नदी सदृश तटकेँ छिन्न-भिन्न करैत, तोड़ैत-फाड़ैत विशृंखलित करैत बेचैन आ लक्ष्यहीन भऽ उठैत छथि। आइ आवश्यकता छल जे छात्र लोकनिक सामूहिक शक्तिक उपयोग सामाजिक तथा राष्ट्रीय हितमे कयल जाइत। से नहि कऽ राजनीतिक दाव-पेंचमे मोहराक रूपमे प्रयोग कयल जाइत छनि।

परिवार, समाज,देश, विद्यालय, महाविद्यालय वा जतय धरि दृष्टि जाय तकर दुर्गन्धपूर्ण वातावरण छैक। किछु नीक केर आशा करब कठिन अछि। आइ ओहि माता-पिता, शिक्षक, नेता वा आन कोनो प्रकारक अभिभावक छुच्छ भाषाक की प्रभाव पड़तैक जे स्वयं चोरि आ पैरवीसँ परीक्षामे उत्तीर्ण भेल होअय-जे भूतमे तथाकथित हीरो छल-आ आइयो अछि-जे आइयो गुण्डागर्दी कऽ वा गुण्डा राखि अपन अस्तित्व कायम रखने अछि।

हम तँ कहब जे आजुक सड़ल पिलुसँ बजबज करैत पारिवारिक, सामाजिक आ राजनीतिक परिवेशमे अनुशासन शब्द अर्थहीन सिद्ध भऽ रहल अछि। अनुशासन-हीनताक जटिल समस्यामे मात्र छात्र लोकनि भागी नहि छथि। 'छात्रगण जतबो धैर्य ओ अनुशासन रखने छथि-ओ धन्यवादक पात्र छथि।

आइ छात्र आ अनुशासनक समस्या गंभीर अछि। एहि दिशामे सरकार, अभिभावक, समाजशास्त्री, शिक्षाशास्त्री आ वयस्क लोकनिकेँ गम्भीरतापूर्वक चिन्तन एवं मनन कऽ तदनुकूल आचरण करबाक चाही। छात्र लोकनिक मध्य सत्य, निष्ठा, लगन, चैतन्य एवं स्वस्थ्य वातावरणक सृजन करय पड़त। हुनक रुचिक अनुकूल शिक्षण व्यवस्था, सुयोग्य एवं चरित्रवान शिक्षक तथा भविष्यक प्रति निश्चिन्तताक व्यवस्था करय पड़त।

□□□

समाचार पत्र

समाचार पत्र आधुनिक युगक परिवेशमे एकटा आवश्यकता थिक। बुद्धिजीवी लोकनि चारि टाकाक समाचार पत्र कीनि देश-विदेशक गतिविधिक सम्बन्धमे अपन जिज्ञासाकेँ शान्त करैत छथि। बहुतो गोटेकेँ तँ समाचार पत्र पढ़बाक तेहन नशा रहैत छनि जे ओ सूति-उठिकेँ चाहक चुस्कीक संग समाचार पत्रक आवश्यकताक अनुभव करैत छथि। घरे-घर संसारक समाचार पहुँचयबाक श्रेय समाचार पत्रकेँ छैक।

समाचार पत्र कतेक तरहक होइत छैक-दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक आ मासिक। दैनिक समाचार पत्र प्रतिदिन बहराइत छै। ई बड़ उपयोगी होइत अछि। ई प्रतिदिन ताजा समाचार दैत अछि। साप्ताहिक, पाक्षिक वा मासिक पत्रिकामे बासि समाचार होइत अछि। ओहिमे कथा-पिहानी, विज्ञापन आदि अधिक रहैत अछि। एहि विकासक युगमे तँ तुरत समाचारक आकांक्षा रहैत छैक। ताहि हेतु दैनिक समाचार पत्र सएह उपयुक्त अछि। आ तँ एकर विक्रय सेहो बहुत होइत छैक।

समाचार पत्रक विकास कतयसँ भेल ई कहब कठिन अछि। तखन एतबा आवश्यक जे ई समाजक आवश्यक अंग बनि गेल अछि। एकरा बिना लोकक ज्ञान अधूरा रहि जाइत अछि। कहल गेल छैक जे सेनाक बाढ़िकेँ रोकल जाय सकैत अछि। किन्तु विचारक तूफानकेँ रोकब असम्भव अछि। समाचार पत्र जनजीवनक लेल आवश्यक भऽ गेल अछि। अल्पो पढ़ल-लिखल लोक सभ प्रकारक गतिविधिसँ परिचित होमय चाहैत छथि। आ ई पत्रेसँ सम्भव होइत छैक। ज्ञानवर्द्धनमे समाचार पत्रक अपूर्व सहयोग अछि। छात्र लोकनिक हेतु तँ ई आओर उपयोगी अछि। हुनका लोकनिकेँ एहिसँ नित ज्ञान भेटैत छनि। छात्रक परीक्षाफल, समाजक हेरायल-भूतिआयल लोकक पता आदि विभिन्न प्रकारक सूचना एहि माध्यमसँ भेटैत छैक।

एतेक रास लाभ रहितहुँ समाचार पत्रमे दोष सेहो कम नहि अछि। समाचार पत्रक सम्पादक जँ योग्य आ पटु नहि होइत छथि तँ कखनहुँ-कखनहुँ अनर्थक सृजन भऽ जाइत छैक। कुत्सित एवं दूषित विचारक प्रकाशन भेलासँ लोकपर अधलाह प्रभाव पड़ैत छैक। समाचार पत्र विचार एवं तथ्यक संकलन थिक। एकरा निष्पक्ष रहबाक चाही। जँ समाचार पत्र राजनीति अथवा विभिन्न वाद आदिसँ प्रभावित रहैत अछि तँ समाचार पत्रक उद्देश्ये समाप्त भऽ जाइत छैक। निर्भीक सम्पादक जँ निष्पक्ष भऽ जाथि तँ विचारक मार्ग प्रशस्त भऽ सकैत अछि-ओ समाचार पत्र आ पत्र-पत्रिका उत्तम मानल जाइत अछि।

देशक उन्नतिक हेतु समाचार पत्र आवश्यक अछि। देशक उत्थान आ पतनक हेतु ई आधारस्तम्भ थिक। एकरा द्वारा जनमतक निर्माण होइत छैक। जँ समाचार पत्र प्रतिबन्धरहित एवं विचार सन्तुलित, निष्पक्ष आ सत्यनिष्ठ रहत तँ देशक उद्धार भऽ सकैत छैक। ई लोकक सभ्यता ओ संस्कृतिक प्रतीक, मानव कल्याणक मूलमन्त्र थिक।

□□□

विज्ञानक चमत्कार

आजुक युग विज्ञानक युग थीक। एकर चमत्कार विश्वकेँ आश्चर्यित कए दैछ। एहेन उन्नति विज्ञानक एहिसँ पूर्व नहि भेल छल। वस्तुतः, ई युग विज्ञानक स्वर्णयुग थीक। एखन विमानमे बैसिकए लोक आकाशमे बिहार कए सकैछ। विदेशयात्रा सुगम आ अल्प समयापेक्षी भए गेल अछि। शीततापनियंत्रण लोककेँ अपूर्व आनन्द प्रदान करैछ। घर बैसल लोक विश्वक समाचारेटा नहि सुनैछ, अपितु संगीत सुनबाक संग संगीतज्ञक स्वरूपक अवलोकन कए आनन्दविभोर भए जाइछ। दूरस्थ मित्रसँ टेलीफोन आ ट्रंक पर सम्भाषण कए लोक सामीप्यक अनुभव करैछ। क्षरकिरणक आविष्कार आ रोगविनाशक औषधिक अन्वेषण विज्ञानक चमत्कारकेँ स्तुत्य बना देने अछि। पुस्तक-प्रकाशनमे सुविधा, चलचित्रक दर्शनजन्य मनोरंजन आ शिक्षाक प्रसार आ प्रचार वर्त्तमान विज्ञानक विशेषताक बोधक थीक। एतबए नहि, एकर सहायतासँ चन्द्रलोक यात्रा सम्भव भए भेल अछि।

एहि विज्ञानक चमत्कारक आधार अछि वाष्प, गैस, विद्युत आ ईथर। एहि आधारसँ सहायता पावि मानव अपन ज्ञानक विकास हेतु उद्यत भेल अछि। आ ओ प्राकृतिक वस्तुपर अधिकार प्राप्त कए चुकल अछि। एहि तरहक चमत्कारपूर्ण विज्ञानक मुख्य अंग अछि पदार्थविज्ञान, रसायनविज्ञान, जन्तुविज्ञान, वनस्पतिविज्ञान, ज्योतिषविज्ञान आदि। एकर उन्नतिक श्रेय छन्हि वैज्ञानिककेँ जे बड़ कर्मठ, परिश्रमी आ जिज्ञासु होइ छथि। ओ प्राकृतिक सत्यकेँ ताकिकए संसारक समक्ष समुपस्थित करब अपन कर्त्तव्य बुझै छथि। विज्ञानक बलेँ असम्भवो कार्य सम्पन्न भए जाइछ।

आजुक युगमे वैज्ञानिक आविष्कारसँ लोक दंग भए गेल अछि। रेल, मोटर, जहाज, वायुयान, रॉकेट, टेलीविजन, तार, टेलीफोन, बिनु तारक तार, रेडिओ, केमरा, मुद्रणयन्त्र, क्षरकिरण, ग्रामोफोन, बिजुलीक पंखा, प्रकाश, डायनामाइट, डाइविंग बेल, लिफ्ट, लाउडस्पीकर, वस्त्र बुनबाक मशीन, बम, अणुबम, गैस, ट्रैक्टर, पम्पिंगसेट, खाद, ट्रंक, कम्प्यूटर, रॉबॉट आदि असंख्य आविष्कार विज्ञानक प्रगतिक प्रतिपादन थीक। एकर असरि राजनीति, व्यापार, विद्या, कला आदि सबहि क्षेत्रमे व्याप्त अछि। ताहिपर नित नवीन आविष्कार आ अन्वेषण देखि अनुमान नहि लगाओल जा सकैछ जे विज्ञानक चमत्कार कतेक बढ़ि गेल।

एहिसँ लाभो अनेक अछि। अल्प अवधिमे लोक एक स्थानसँ दोसर स्थान सुविधासँ जा सकैछ। क्षणभरिमे विश्वक समाचार लोक घरहि पर रहिकए ज्ञात कए सकैछ। रेडिओसँ विदेशी समाचारक संग मनोरंजन होइछ। टेलीविजनक सहायतासँ लोक अन्य स्थानमे नृत्यगीतादिमे भागलेनिहार व्यक्तिक शब्द आ गाने टा नहि सुनैछथि, अपितु ओहि व्यक्ति सबहक स्वरूपक साक्षात्कार करैत छथि। नवीन ओषधिक अनुसंधान आ नवीन यंत्रक पता लोककेँ लगैछ। क्षरकिरण, विद्युतसेवा, चीरफाड़, सुई आदि वैज्ञानिक साधनसँ चिकित्सामे विशेष लाभ प्राप्त होइछ। डाइनामाइट सहायतासँ पहाड़केँ फूकिकए उड़ा देल जाइछ। डाइविंग बेलसँ समुद्रसँ पानि निकालल जाइछ। गगनचुम्बी अट्टालिकामे अथवा गहीड़ खानमे लिफ्टसँ चढ़बा आ उतरबामे पूर्ण सहायता भेटैछ। लाउडस्पीकर विचारकेँ स्पष्टकए

श्रवणगोचर करएबामे महान् सहायक होइछ। कृत्रिम वर्षासँ अनावृष्टिजन्य कष्ट दूर कएल जाइछ। मुद्रणयंत्र पुस्तक प्रकाशनमे सुविधा प्रदान करैछ। वस्त्रमिलसँ वस्त्रोत्पादनमे सहायता भेटैछ। दूरदर्शक यन्त्रसँ दूरस्थ आ अनुवीक्षणयंत्रसँ अत्यन्त लघु वस्तु देखल जा सकैछ। चलचित्रसँ रूपक प्रत्यक्षीकरण आ मनोरंजन होइछ। चीनीक उत्पादनमे मिलसँ सहायता प्राप्त होइछ। विद्युतसँ प्रकाश, वायु, पानि आदि अनेक वस्तुक प्राप्ति सुलभ भए जाइछ। एहि तरहेँ विज्ञानसँ मानवक बड़ उपकार भेल अछि।

परंच एहिसँ हानियो थोड़ नहि होइछ। अणुशक्तिक संहारकारी विस्फोटसँ धनजनक विनाश होइछ। मशीनक चलती होइछ। फलतः, शारीरिक श्रमक ह्रास होइछ; बेकारीक समस्या बढ़ैछ। विलासिताक साधनक प्राचुर्यसँ लोक धनक संग स्वास्थ्यपर्यन्त नष्ट कए लैछ। एहिसँ गृहउद्योगकेँ क्षति पहुँचैछ। भौतिक पदार्थक बोलबालाक कारणेँ अध्यात्मवादक विनाश होइछ। धर्मक प्रति मानवक मनमे अविश्वास जड़ि जमा लैछ। मानवता विनाश दिशि दौड़ैछ। विद्युतसँ प्रकाश भेटैछ मुदा प्राणहानि होइछ। विस्फोटसँ भरल-पुरल ग्राम तथा नगर क्षणभरिमे खाक भए जाइछ; सब ठाम शून्य श्मशान राज्य करैछ।

तथापि जे किछु हो विज्ञान सुखद आ दुखद दुनू अछि। एहिपर कोनहु देश आ समाजक उत्थान-पतन निर्भर करैछ। विश्वकल्याण आ मानवताक रक्षाहेतु वैज्ञानिक नियन्त्रण आवश्यक अछि। एकर उचित आ अनुचित प्रयोगक उत्तरदायित्व मनुष्यहि पर निर्भर करैछ। मानवक दृष्टिकोणमे सुधार आवश्यक अछि। एहि हेतु आत्मशुद्धि आ अध्यात्मवादक विकासक आवश्यकता छैक। भौतिकवाद मानवक नैतिक पतन आ अधर्मक मूल कारण थीक। विज्ञानक ताण्डवनृत्य रोकए हेतु भौतिकवादी जगत्सँ आध्यात्मिक जगत् दिशि डेग बढ़ाएब आवश्यक अछि। सदुपयोग भएने विज्ञान अपन अलौकिक चमत्कारक वरदानमे रहत-अभिशाप नहि।

□□□

चलचित्र

आजुक युग विज्ञानक स्वर्णयुग थीक। एकर महत्व भूमितलसँ नभमण्डलधरि पसरल अछि। विज्ञानक देन महान अछि। कार्यवस्तु दु:खसन्तप्त जनताक सुखक साधन जनमनोहारी मनोरंजनक उद्‌गम आ साधारण शिक्षाक प्रबल स्त्रोत थीक चलचित्र जे धीरगम्भीर मानवपर्यन्तक चित्तकेँ अपन चारु चमत्कारसँ चंचल बना दैछ। एकर आविष्कारक कथा बड़ आकर्षक अछि।

सत्रहम शताब्दी छल। किचनर महोदयक ध्यान चित्र देखएबाक दिशि आकृष्ट भेल। मोमब्रिम साहेब स्थिर छायापटक आविष्कार कएल। अमेरिका निवासी एडीसन साहेब 1920 ई0 मे छायाचित्रकेँ चलबा-फिरबाक शक्ति प्रदान कएल। दादा फाल्के भारतमे एकर प्रवेश कराओल। 1913 ई0 मे प्रथम भारतीय फिल्मक निर्माण भेल। प्रारम्भमे सब चित्र मूक रहै छल। 1928 ई0 मे एहिमे वाणीक संचार भेल। ताहि समयसँ चित्र आओर आकर्षक आ प्रभावोत्पादक भए गेल।

एहि प्रदर्शनक प्रधान अंग बनल संगीत, नृत्य, कथा आ अभिनय। एहि हेतु आबालवृद्ध, साक्षर-निरक्षर सबहि व्यक्ति चलचित्र देखबाक लेल उत्साहित भेलाह। प्रदर्शनक स्थान स्थायी बनल। एक पैघ भवनमे प्रदर्शनक प्रारम्भ भेल। एहि आनन्दभवनमे प्रवेश पएबाक हेतु दर्शककेँ श्रेणीक निश्चित द्रव्य दए आज्ञापत्र प्राप्त करए पड़ै छन्हि। शान्तिक हेतु पूर्ण प्रबन्ध रहैछ।

फिल्म-निर्माणमे बहुत समय लगैछ। अनेको स्थानमे आवश्यक आ अपेक्षित चित्रक फोटो लेल जाइछ। बहुतो व्यक्ति एहि कार्यमे सम्मिलित होइ छथि। सबहि प्रकारक व्ययमे लाखो रुपैआ लागि जाइछ।

चलचित्र एक क्रान्ति कए देलक अछि। एकर प्रसार दिन दूना राति चौगुना भए रहल अछि। पैघ नगरसँ छोट शहर धरि एकर धारी लागल अछि। शिक्षित-अशिक्षित, धनी-निर्धन, सबहि श्रेणीक व्यक्ति एकर प्रदर्शन देखि मनोरंजनक संग शिक्षा प्राप्त करै छथि। परंच छात्रक लेल ई विशेषतया मनोरंजनक केन्द्र बनि गेल अछि। एकर मनोहारी दृश्य, मधुर संगीत, अनुपम कथा आ विविध विषयक चारुचित्र दर्शकक मानस-सरमे भावभ्रमर उत्पन्न कए भौतिक जगत्‌सँ अत्यन्त दूर कमनीय कल्पनाक ललित लोकमे 'सत्यं शिवं सुन्दरम्'क अभिनव अनुभवक अभ्यन्तर अनिर्वचनीय आनन्द प्रदान करैछ। अत: एकर व्यापकता सर्वविदित अछि।

एहिसँ लाभो अनेक होइछ। मानव पेटक भूख शान्त भेलाक उपरान्त किछु आओर चाहैछ जाहिसँ ओकर मानसिक भूख मेटा सकए। चलचित्र एहि कार्यमे सम्यक् सहाय्य प्रदान करैछ। सर्वांगीण मनोरंजन पूर्णरूपेण सफल होइछ। शिक्षाक प्रचारमे सुगम, सुबोध आ सर्वप्रिय साधन उपस्थित कए चलचित्र अपन चारुकात परिचय दैछ। प्रत्यक्ष दृश्यक अवलोकनसँ व्यावहारिक शिक्षा भेटैछ जाहिसँ मानवक रचनात्मक शक्ति जागि जाइछ आ रचनात्मक कार्य लेल अभिरुचि उत्पन्न होइछ। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि प्रकारक सुधारकार्य सुलभ रीतिएँ सम्भव होइछ।

विज्ञापन आ प्रचारक ई प्रधान साधन भए गेल अछि। एहिसँ व्यापारमे बड़ सुविधा भेटैछ। एहि वयवसायमे सैकड़ो व्यक्ति सम्मिलित भए जीविकोपार्जन कए बेकारी-समस्याकेँ सोझरबै छथि।

तथापि एहिसँ सम्भावित हानि नगण्य नहि अछि। अधिक काल चलचित्रक अवलोकन कएनिहारक नेत्रज्योति क्षीण भए जाइछ। अधलाह आ अधम चित्रक अवलोकनसँ चरित्र भ्रष्ट होइछ। कुवासनापूर्ण प्रदर्शनसँ विशेषतया नवयुवक आ नवयुवती कुवासनाक मोहमे पड़ि अपन आचार-विचारकेँ तिलांजलि दए कुलमे कलंकक कालिमा लगबै छथि। एहिसँ आचारभ्रष्टता समाज आ राष्ट्रक हेतु हानिकारक रोग प्रमाणित होइछ। एकर चाट ततेक अधलाह होइछ जे दर्शक कर्त्तव्याकर्त्तव्यक विचारकेँ ताखपर राखि धन, धर्म, समय आ साधनक अपव्यय करैछ। एहि प्रकारेँ चलचित्र व्यक्ति, समाज आ राष्ट्रक उन्नतिमे बाधक बनैछ।

वस्तुतः, चलचित्रसँ लाभ ओ हानि दुनू होइछ। सदुपयोग कएनिहारकेँ लाभ आ दुरुपयोग कएनिहारकेँ घाटा हाथ लगैछ। एकर प्रकाशनक आज्ञा देनिहार अछि सरकार। अतएव उचित थीक जे सरकार अरुचिपूर्ण, अश्लील आ हानिकारक फिल्मक आ अभिनयकेँ रोकए। धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आ शिक्षाप्रद सिनेमाकेँ प्रोत्साहन भेटए। सिनेमा-भवन केवल मनोरंजनक केन्द्र नहि, अपितु मानवकल्याणक भावनासँ ओतप्रोत सार्वजनिक स्थान बनए। एहि हेतु सरकार आ जनता दुनूकेँ साकांक्ष रहब उचित थीक।

□□□

रेडिओ

आजुक युगमे विज्ञानक विकास दिनानुदिन आगाँ बढ़ि रहल अछि। एहिसँ असंभवो कार्य सम्भव देखि पड़ैछ। केओ नहि अनुमान कए सकै छल जे घरहि बैसल-बैसल हजारो कोसक दूरीपर गाओल गीत आ देल भाषण तत्कालहि अक्षरशः सूनिकए ज्ञान आ आनन्द प्राप्त कए सकत, मुदा आइ ओ सुगम रीतिसँ सानन्द सुनल जाइछ। एहि आश्चर्यजनक घटनाचक्रक आधार अछि रेडिओ अर्थात् ध्वनिक यंत्र।

एकर जन्मदाता भेलाह इटलीक मारकोनी साहेब। हुनकहि द्वारा एकर आविष्कार सन् 1929 ई0 मे भेल। एकर सर्वप्रथम प्रचार इंगलैण्डमे भेल। प्रचार दिनानुदिन बढ़ए लागल। आइकाल्हि ई गामघरमे पसरि गेल अछि।

एकर सिद्धान्त बिचित्रे अछि। बेतारक तार एकर आधार अछि। जखन केओ व्यक्ति बजैछ तखन ओहि व्यक्ति द्वारा उच्चारित शब्दसँ वायुमण्डलमे कम्पन्न होइछ ओ कम्पन्न द्रुतगतिसँ भ्रमण करैछ। यंत्र ओकरा धारण करैछ। ओहिसँ ध्वनि उत्पन्न होइछ। ओएह ध्वनि लोक सुनैछ। शब्द आ ध्वनिक स्थानकेँ जोड़ए हेतु तारक आवश्यकता नहि होइछ।

एकर मुख्य अंग थीक ब्रॉडकास्टिंग। एहि लेल स्थान नियत रहैछ। ओतएसँ समाचार प्रेषित कएल जाइछ। एहि कार्यक लेल एक स्टेशन रहैछ जे ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन कहबैछ। समाचार वायुपूर्ण घरमे एक यंत्रक आगाँ कहल जाइछ। ओहि यंत्रक नाम अछि 'माइक्रोफोन'। वायु द्वारा ओहि समाचारक शब्द कम्पन दूर देश तक लए गेल जाइछ। ओहि दूरस्थ स्थानपर लोक रडिओसेट रखैछ। जाहि स्टेशनक विषय ज्ञात करबाक इच्छा होइछ स्टेशनक स्थानपर लोक रेडिओक तार स्थिर कए दैछ। समाचार एहि तरहेँ सुनबामे अबैछ जेना केओ व्यक्ति निकट स्थानमे बैसिकए बाजि रहल अछि।

एहिसँ अनेको लाभ होइछ। देशविदेशक वार्त्ता भेटैछ। विभिन्न राग-रागिनीमे विभिन्न स्थानक विभिन्न व्यक्ति द्वारा गाओल गीत मधुरता श्रवण कए लोक मनोरंजनक संग ज्ञान प्राप्त करैछ। रेकार्डक गीत असीम आनन्द प्रदान करैछ। कलापूर्ण कविता, कमनीय कथा, नूतन नाटक, अभिनव आलेख आदिक स्पष्ट पाठ लोक घरहि बैसल सुनैछ। फलतः, लोक अपन दुःख वा व्यापक विपत्ति-गाथासँ मुक्त भए आनन्दक तरंगमे डुबकी लगबए लगैछ। ई शिक्षाप्रचारक क्षेत्रमे क्रांति उत्पन्न कएलक अछि। पैघ-पैघ विद्वानक भाषण सुनि लोक महान् लाभ प्राप्त करैछ। अशिक्षित पुरुष तथा स्त्रीकेँ शिक्षित बनएबामे सहायता भेटैछ। कृषि, गृहस्थी, सामाजिक आ भौगोलिक ज्ञानक विकास आ प्रचार होइछ। मुख्यतया छात्रसमाजकेँ शरीरविज्ञान, कृषि, भूगोल, यात्रा आदि विषयक भाषणसँ अपूर्व ज्ञान प्राप्त होइछ। शासनसम्बन्धी कानून, नियम आ व्यवस्थापक प्रचारसँ नेतालोकनिकेँ शासनमे सुविधा भेटैछनि, विज्ञापन आ प्रचार-कार्य समुचित ढंगसँ सर्वत्र भए सकैछ। व्यापारीगणकेँ बाजारक चढ़ैत आ उतरैत भावक ज्ञानसँ आशातीत लाभ भेटैछ।

रेडिओक संग टेलीविजनक मेलसँ लोक गबैया आदिक संगीत सुनबाक संग स्वरूप पर्यन्तकेँ प्रत्यक्ष देखि सकैछ। सबसँ विशेष लाभ होइछ विश्वक घटनाक ज्ञान आ ओहिसँ विश्वकेँ एक सूत्रमे बान्हबाक सुविधा।

रेडिओसँ हानि बड़ थोड़ होइछ। धनी आ विलासी व्यक्ति धनक मोह छोड़ि दैछ। ओ समयक मूल्य बिसरि जाइछ। कोनहु वस्तुविशेष-सम्बन्धी भाषणक द्वारा जनताकेँ उमाड़ल जा सकैछ जे महाघातक सिद्ध होइछ।

रेडिओ सर्वहितकारी अछि। हानिकारक अंशक बहिष्कारसँ सोनामे सुगन्धि आबि जाइत। एकर बाढ़िसँ विश्वकेँ एक सूत्रमे बान्हिकए ज्ञानक प्रत्येक क्षेत्रमे विकास प्राप्त कएल जा सकैछ। अतएव सुखी-सम्पन्न व्यक्ति एहिसँ लाभ उठाबथि।

□□□

स्त्रीशिक्षा

'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' उक्ति सर्वमान्य अछि। वस्तुत: जननीक तुलनामे किछु नहि आबि सकैछ। हिनक स्थान स्वर्गहुसँ ऊपर अछि। हिनकहि महत्त्व अछि जे भूमि हिनकर सम्पर्क प्राप्त कए स्वर्गहुसँ बढ़िकए महत्त्वपूर्ण भए जाइछ। हिनक स्थान समाजमे सदा पूज्य अछि। उक्ति प्रसिद्ध अछि 'यत्र नार्यो हि पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:'। अत: सुख सम्पत्ति हिनक पूजाक प्रसाद थीक। एतबए नहि, यदि सामाजिक दृष्टिसँ देखल जाए तँ ई राष्ट्रमाता थिकीह, समाजक मानप्रतिष्ठा रखिनिहारि स्त्री थिकीह, जीवनकेँ पूर्ण कएनिहारि पुरुषक अर्द्धांगिनी थिकीह, अपन कला आ कुशलतासँ गृहक भार उठाबए हेतु गृहिणी थिकीह, पतिक जीवनकेँ सफल आ सानन्द बनओनिहारि पत्नी थिकीह, विभिन्न रूप अपनाकए भवनक भव्यताक रक्षा कएनिहारि स्वामीक अनुगामिनी भामिनी थिकीह आ भावी सन्ततिकेँ सफल नागरिक बनओनिहार समाजक जननी थिकीह। 'बिनु घरनी घर भूतक डेरा' सर्वत्र प्रचलित उक्ति अछि। हिनक स्थान समाजमे बड़ पैघ आ पूज्य अछि। अतएव एहि गृहलक्ष्मीक शिक्षा दिशि ध्यान देब समाजक सर्वप्रथम कर्त्तव्य थीक।

समाजक प्रत्येक व्यक्ति जनैछ जे मानवजीवनरूपी रथक दू पहिआ अछि-पुरुष आ स्त्री। यदि दुनू पहिआ समान गुणवान, बलवान आ कार्यक्षम रहत त जीवनरथ दनदनाइत चलत आ कहिओ ओ अपटी खेतमे नहि खसत। परञ्च आजुक युगमे स्त्रीशिक्षा दिशि दृष्टिपात करितहि रोमांच भए जाएत। शिक्षासँ वंचित राखि स्त्रीगणकेँ जड़बुद्धि बनाकए पशुवत् कार्य लेब समाज आ राष्ट्रक हेतु महान् हानिकारक थीक। अतएव स्त्रीशिक्षाक प्रचार आ प्रसार अत्यावश्यक अछि। एहिसँ अनेको लाभ होएत।

अशिक्षिता स्त्री पशुतुल्य रहैछथि। ज्ञानक गुण रहितहुँ शिक्षाक अभावमे हुनका ज्ञानक आलोक नहि भेटैछनि अज्ञानता हुनका जकड़ि लैछन्हि। परञ्च ज्ञानक प्रकाश पबितहि हुनक सद्विवेकनी बुद्धि जागि जाएत। हुनक संकुचित हृदय उदार भए जाएत। स्वार्थभावना विलीन होएत। परमार्थ परमपद प्राप्त करत। हुनका नीक-अधलाहक तथा शिष्टाचारक शिक्षा भेटतनि। ओहिसँ सामाजिक स्थिति सुधरत। गृहकार्यमे ओ कुशलता पओतीह। ओ आय-व्ययक हिसाब राखि पारिवारिक आर्थिक समस्याकेँ सुधारतीह। घरक व्यवस्था बदलत। पुरुषक जीवन पुण्यमय भए जाएत। हिनक स्वच्छताक सुरक्षा आ गृहकार्यक उत्तम प्रबन्ध गृहकेँ सुख, शान्ति आ सामंजस्यक केन्द्र बनाकए धरतीपर स्वर्ग बसाओत। ओतए चिन्ता, व्यग्रता, दु:ख, फुट आदिक कलुषित भावनासँ मुक्त व्यक्ति सफल नागरिक बनबामे समर्थ होएताह। अतएव सबहि प्रकारक अभ्युदयक मूल शिक्षाक स्वरूप स्थिर करब परमावश्यक अछि।

यद्यपि आजुक युगमे समानताक अधिकार स्त्रीसहितकेँ भेटल अछि आ अनेको देशमे पुरुषसदृशे शिक्षाक व्यवस्था स्त्रीक हेतु अछि तथापि शिक्षाक स्वरूपक सम्बन्धमे विभिन्न मतक अवलोकन परमावश्यक अछि।

दुई प्रकारक मत देखि पड़ैछ-एक पश्चिमीय आ दोसर पूर्वीय। पश्चिमीय सभ्यताक अनुगामी आ व्यक्तिक अनुसार स्त्रीकेँ पुरुष सदृश शिक्षा भेटब उचित थीक, परंच पूर्वीय मतक अनुगामी व्यक्तिक भारतीय आचारविचार आ रहन-सहनक अवलोकन कएलासँ स्पष्ट भए जाएत जे स्त्रीशिक्षा पुरुषशिक्षासँ भिन्न हो। कारण, स्त्रीक स्थान अछि घरक अभ्यन्तर आ पुरुषक स्थान अछि मुख्यतया बाहर। स्त्रीकेँ गृहलक्ष्मी बनक छनि मुदा शिक्षामे साहित्य, संगीत, कला आ गृहविज्ञान विषयक अतिरिक्त आन विषय आवश्यक अछि। शिक्षा प्राप्त करबाक लेल हिनका विद्यालय आ महाविद्यालय जाएब आवश्यक अछि। ओ घरहिपर रहिकए सब वस्तुक ज्ञान अपनासँ श्रेष्ठ जन द्वारा प्राप्त नहि कए सकै छथि। संगहिसंग हिनका सर्वांगीण शिक्षा देबाक लेल शरीर आ स्वास्थ्यविज्ञान, गृहप्रबन्ध, कताई-सिलाई, शिशुपालन, बालमनोविज्ञान आदि विषयक पूर्ण शिक्षा चाही।

अतः स्पष्ट अछि जे स्त्रीशिक्षा अत्यावश्यक अछि, मुदा विदेशी पद्धति विनाशकारी अछि। ओहि पद्धतिक अनुसरण कए स्त्री अपन आचारविचारकेँ ध्वस्त कए समाज, देश आ राष्ट्रक अहित कएनिहारि नहि होथि। हुनका हेतु उचित थीक जे ओ लीलावती, मैत्रेयी, गार्गी, विद्यावती, विश्वपा, लोपामुद्रा आदि शिक्षिता भारतीय नारी बनथि। एहिसँ सुन्दर समाजक, राष्ट्रक जननी स्त्री गृहलक्ष्मी बनि पृथ्वीकेँ स्वर्ग बनाबथि। मुदा आजुक परिवेशमे सर्वतोभावेन सुशिक्षिता होयब आवश्यक अछि तखने बाल-बच्चाक भविष्य सम्हार सकतीह।

□□□

वर्षधरिक पुरुष आ स्त्रीकेँ साक्षारताक संग अनेक विषयक ज्ञान प्रदान कएल जाए। एहि ज्ञानप्रचारक हेतु नाटक, संगीत, भाषण आ वार्त्तालापक माध्यम अपनाओल जाए।

ओहि उद्देश्यक पूर्त्तिलेल समाजशिक्षा पद्धति प्रस्तुत कएल गेल। ओकर निरीक्षण आ विकासमे सहायता प्रदान करबाक हेतु प्रान्त-प्रान्तमे समाजशिक्षा पदाधिकारीक नियुक्ति भेल। जनमनरंजक माध्यमसँ विभिन्न कलाक प्रदर्शन द्वारा अनेकानेक विषयक ज्ञानदानहेतु मोदमण्डली बनल। ओ देशभरिमे घूमि-घूमि कए समजाकेँ विकास दिशि अएबाक हेतु आकृष्ट कएलक। सामाजिक शिक्षाक केन्द्र खुजल। ओहि केन्द्रमे शिक्षार्थीक सुविधाहेतु सरकारक पुस्तक, नक्शा, श्यामपट्ट, लालटेन, खड़ी, झाड़न आ शिक्षाक भत्ता आदिक व्यवस्था कएलक।

सरकारक एहि प्रयाससँ देशकेँ बड़ लाभ भेल। अधिकांश व्यक्ति लिखब-पढ़ब जानि गेलाह। देशविदेशक समाचार पढ़ि आ वार्त्ता सूनि अपन स्थितिक सुधारमे ओ समर्थ भेलाह। समाजमे नवजीवनक संचार भेल। आलस्य, भीरुता, उदासीनता आ परतंत्रताक स्थानमे स्फूर्ति, निर्भयता आ स्वतंत्रताक भाव समाजकेँ समंगल बनएबा दिशि अग्रसर कयलक।

अतः स्पष्ट देखि पड़ैछ जे वयस्कशिक्षा योजनाक उद्देश्य बड़ उत्तम अछि। एहिसँ देश आ समाजकेँ लाभ भेल अछि आ होइत रहत। फलतः, दिनानुदिन समाजक विकास होएत। परंच स्वार्थलोलुप व्यक्तिक दमन आवश्यक अछि जाहिसँ राष्ट्रीय धनक रक्षा आ सुव्यवस्था सम्भव हो। एहिसँ योजनाक सर्वांगीण विकासमे सहायता होएत। परंच सरकारहिपर पूर्णरूपेण अवलम्बित रहब उचित नहि, अपितु जनताकेँ हाथ बटाएब आवश्यक अछि। कारण, सरकारो त जनताक बनाओल अछि आ जनताक सदस्य सरकारी सदस्य छथि। सजग भेलापर जनता सरकारक सहायता कए स्वार्थलोलुप व्यक्तिकेँ पदच्युत कए ठोस योजनाक कार्यमे सहायक बनत जाहिसँ समाज, देश आ राष्ट्रक उन्नति होएत।

□□□

वयस्क-शिक्षा

अवस्थाक आधार पर मानवजीवन मोटा-मोटी चारि भागमे विभाजित कएल जाइछ-(1) बाल्यावस्था (2) किशोरावस्था (3) प्रौढ़ावस्था (4) वृद्धावस्था। एहिमे प्रारम्भिक दुई अवस्थामे साधारणतया शिक्षाक प्रारम्भ आ समाप्ति होइछ। एहि हेतु प्रारम्भिक अवस्थामे शिक्षासँ विमुख रहनिहार व्यक्ति जीवनभरि निरक्षर रहैछथि। एहि श्रेणीक वयस्क व्यक्तिकेँ साक्षर बनएबाक लेल जे शिक्षा देल जाइछ से थीक वयस्क-शिक्षा।

विचार कएलापर स्पष्ट रूपेँ देखि पड़त जे प्राणिमात्र जीवनमे सुख आ सुविधाक प्राप्तिहेतु लालायित रहैछ। दिनानुदिन उन्नति करबाक अभिलाषा मानव-मात्रक हृदयमे रहैछ। उन्नतिशील बनबाक हेतु व्यक्तिक समुदायक ध्येय होइछ जे समाजक सर्वांगीण विकास हो जाहिसँ समाजक प्रत्येक सदस्यकेर सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक आ शैक्षणिक क्षेत्रमे उन्नति हो आ समाजक प्रत्येक व्यक्तिक शारीरिक, मानसिक आ आध्यात्मिक विकास हो जाहिसँ समाज समुन्नत बनल रहए, परंच संयोग एहन बिगड़ल देखि पड़ैछ जे लगभग 75 प्रतिशत जनता एखन धरि निरक्षर अछि जाहिमे वयस्क व्यक्ति अधिक छथि।

निरक्षरता व्यक्ति आ समाजक हेतु महान् शत्रु थीक। ई मानव के मानवतासँ विहीन बनाकए पशु श्रेणीमे राखि दैछ। फलतः, मानव जीवनमे कोनहु प्रकारक उन्नतिहेतु विचारविमर्शपर्यन्त करबामे अक्षम रहैछ। ई मानवजीवन हेतु महान् अभिशाप थीक। एहिसँ राष्ट्रोन्नतिमे बड़ पैघ अड़चन उपस्थित होइछ। सामाजिक आ व्यावहारिक जीवनमे लिखापढ़ीक अवसरपर अशिक्षित व्यक्ति तीन कौड़ीकनहि रहैछ। अकसरहाँ निरक्षर भट्टाचार्य होएबाक कारणेँ धूर्त्त आ बेईमान व्यक्तिक पालामे पड़ने मनुष्य मारल जाइछ। देशविदेशक समाचारसँ अनभिज्ञ रहनिहार निरक्षर व्यक्ति कूपमण्डूक बनल रहैछ। आपसमे ईर्ष्या, द्वेष, कलह आ फूटकेँ आसन दए ओ समाजक विकासमे बाधक बनैछ।

अतएव जाधरि निरक्षरता पएर तोड़िकए घर-घर बैसल रहत ताधरि लोकक हृदयमे छोट कार्यलेल अनकर आगाँ झुकब आ कृतज्ञता स्वीकार करब व्यक्तिक हेतु आदरक विषय नहि थीक। विश्वक प्रगतिशील मंचपर अग्रसर भेल भारतक निवासीकेँ निरक्षर रहब कथमपि शोभनीय नहि होइछ। अतः सर्वतोमुखी विकास चाहनिहार भारत सन देशक लेल वयस्क-शिक्षाक प्रबन्ध परमावश्यक अछि।

देशकेँ उन्नत देखबाक लेल इच्छुक छल काँग्रेस। अतएव हाथमे प्रान्तीय सत्ता अबितहि सन् 1937 ई0 तक निरक्षतानिवारण-आन्दोलनक आविर्भाव भेल। संयोगसँ डा0 महमूद बिहारप्रान्तक शिक्षामंत्री भेलाह। ओ अपन शक्तिभरि जोर लगाओल। फलतः, आंशिक लाभ देशवासीकेँ आकृष्ट कएलक। एहि हेतु सन् 1947 ई0 में स्वतंत्रता प्राप्त होइतहि सबहक ध्यान वयस्क-शिक्षा दिशि बढ़ल। शिक्षा-योजना बनल। एकर उद्देश्य स्थिर भेल। अतः प्रत्येक व्यक्तिकेँ समाजोपयोगी नागरिक बनएबाक निर्णय भेल। प्रान्तीय सरकारक योजनाक समर्थन आ कार्यान्वयनहेतु केन्द्रीय सरकार अपन निर्णय जनताक समक्ष उपस्थित कएल। एहि आधारपर सरकार योजना बनाओल जे 12 वर्षसँ 45

श्रमदान

मानव-सभ्यताक संग लोकक आवश्यकता बढ़ल जा रहल अछि। समय थोड़ छैक आ बाधा अनेक। एहि लेल मनुष्य घबड़ा जाइछ। ओ केवल अपनहि पर निर्भर रहिकए आगाँ बढ़बाक विवश भए जाइछ। एहि स्थितिमे ओ हाथ पसारैछ आ दानक भीख मङैछ। ई दान आर्थिक, मानसिक आ शारीरिक होइछ। आर्थिक दानमे एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक हित लेल किछु द्रव्यक दान करैछ परंच ओकरा हृदय पसिझब अनिवार्य नहि रहैछ। मानसिक दानसँ मनुष्य मन नहि रहितहुँ परिस्थितिसँ बाध्य भए सुझाव उपस्थित करैछ जाहिसँ दान प्राप्तिकर्त्ताक मंगलक बोध होइछ। एकर महत्त्व तावत धरि रहैछ यावत धरि शारीरिक श्रमक संयोग नहि हो। शारीरिक दानमे हृदयक सहायताक बिनु काज नहि चलि सकैछ। एहि हेतु श्रम करए पड़ैछ। अत: स्पष्ट भए जाइछ जे सब दानक जड़ि थीक शारीरिक श्रम। एकर उद्देश्य रहैछ जे एहन वस्तुक उत्पादन हो जाहिसँ मनुष्यकेँ उपयोगिता भेटए। अतएव मानए पड़त जे श्रमदान उपयोगी वस्तुक उत्पादनहेतु प्रयास थीक।

एकर आधार अछि सर्वोदयक भावना। एहि सिद्धान्तक अनुसार कोनहुँ पियासल व्यक्तिकेँ जल दए जीवन बचएबामे सहानुभूति आ त्यागक भावना प्रबल रहैछ। योग्यतानुकूल उपयुक्त व्यक्तिकेँ कोनहु प्रकारक सहायता सम्भव देखि पड़ैछ। फलत: सरकारहीन सहयोगी समाजक निर्माण होइछ जे पारस्परिक सहयोग आ सहायता बलेँ जीवनक विविध आवश्यकताक पूर्त्तिमे सफल होइछ। पूँजीक हेतु सम्पति नहि प्रत्युत श्रम काज करैछ। इएह कारण छल जे संत बिनोवा श्रमदानक आरम्भ कताइसँ कएल। एहि यज्ञक तिथि रहल बापूक जयन्तीक दिन।

एकर उद्देश्य अछि अन्न आ जीवनक अन्य आवश्यक उत्पादन। उत्पादन मुख्यतया शारीरिक बल पर निर्भर करैछ। पूँजीपतिओ त निर्धन व्यक्तिक श्रम कीनि कए अपन सम्पत्ति बढ़बै छथि यद्यपि वास्तविक श्रम कएनिहार व्यक्ति भूखल रहैछ। मध्यमवर्गक व्यक्तिकेँ ने पूँजी छनि आ ने ओ श्रम करए चाहै छथि। ओ शारीरिक श्रमकेँ अपन प्रतिष्ठासँ हीन बुझै छथि। इएह कारण अछि जे समाजमे एहि वर्गक व्यक्ति सबसँ अधिक दुखी छथि। हिनका समक्ष आर्थिक संकट सदा समुपस्थित रहैछ। उपजामे त्रुटि होइछ। स्थिति बिगड़ल जाइछ। साधारण श्रेणीक व्यक्ति सहितमे त्रुटि देखि पड़ैछ। ओ श्रमसँ घृणा नहि करैछ प्रत्युत श्रमक नामपर जीवनयापन करैछ, परंच हृदयसँ शक्तिक अनुसार श्रम नहि करैछ। एहिसँ देशमे अभावे अभाव देखि पड़ैछ। एहि अभावकेँ दूर कएल जा सकैछ मुदा एकरा हेतु ने धनक आवश्यकता छैक आ ने सरकारी आज्ञाक। एकरा हटएबाक एकमात्र उपाय अछि श्रमदान।

एकर विकास तहिखन सम्भव अछि जहिखन मनुष्य श्रमदानक महत्त्वसँ परिचित भए जाए। एहिसँ लाभ अवश्यसम्भावी अछि मुदा आवश्यकता छैक जे लोक श्रमदानक आवश्यकताक अनुभव करए। ई त प्राणिमात्रक धर्म थीक। एहि हेतु कानून आ दण्डक विधान नहि, अपितु कर्त्तव्यक भावना रहब आवश्यक। तेँ प्रत्येक व्यक्तिक कर्त्तव्य भए जाइछ जे ओ शक्तिक अनुसार श्रमदान करए।

एहि हेतु प्रत्येक व्यक्तिक मनमे अभिरुचि उत्पन्न होएब अनिवार्य अछि। एतबए नहि, अनुकूल विचारो बड़ पैघ महत्त्व रखैछ। श्रमदान एकतरफा दान नहि थीक। ई थीक पारस्परिक आ सामूहिक। यदि आइ एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक ओतए श्रम करैछ त उचित थीक जे दोसरो व्यक्ति ओकरा ओतए श्रमदान करए। एतबए नहि, एकर महत्त्व त सबसँ अधिक बढ़ैछ यदि ई सामूहिक हो। एहि कार्यक लेल क्षेत्रो बड़ विशाल देखि पड़ैछ। अन्नसमस्याक समाधानहेतु बेकार भूमिकेँ खेतीक योग्य बनाएब अत्यावश्यक अछि। भारतभूमिकेँ उन्नत बनएबाक लेल ग्रामोत्थान करब परमावश्यक अछि। एहि लेल सड़क बनाएब, नहरि कोड़ाएब, पुल बनबाएब, रेलवेक प्रबन्ध करब, इनार कोड़ाएब, विद्यालय भवन बनबाएब आदि कार्य सुविधासँ श्रमदान द्वारा भए सकैछ। यदि जनता ध्यानस्थ हो त सबटा कार्य सम्भव अछि। जनता श्रमदानकेँ अपनाकए अनायासहि सबटा कार्य सम्पन्न कए लेत। एकर उदाहरणमे कोशीक बान्ह सबहक समक्ष प्रत्यक्ष अछि।

श्रमदान भूदानयज्ञक अगिला सीढ़ी थीक। एहिसँ सर्वोदयक कार्यमे सफलतापूर्ण सम्भावना देखि पड़ैछ। एहि हेतु कोनो जोरजबर्दस्ती नहि अपेक्षित छैक। एहि लेल आवश्यक छैक प्रेम आ सहयोग, जे हृदयक गुण थीक। एकर क्षेत्र महान् अछि आ विकास अवश्यसम्भावी अछि मुदा आवश्यकता छैक लोकश्रमक महत्त्वकेँ बूझए। यदि ध्यानसँ देखल जाए तँ ई श्रमक राष्ट्रीयकरणहेतु चतुर डेग थीक। कोशीयोजना प्रत्यक्ष उदाहरण उपस्थित करैछ जे महान् कार्य श्रमसँ सुलभ रीतिएँ सम्पन्न भए जाइछ। एहि हेतु समाजक सब वर्गक मनुष्यक कर्त्तव्य होइछ जे ओ श्रमदानमे हाथ बटाकए समाज, देश आ राष्ट्रक उन्नतिमे सहायक हो।

□□□

अकाल

'अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्यन्यादन्नसम्भवः' अर्थात् मेघ वर्षा कए जल दैछ, जलसँ अन्न उपजैछ आ अन्नसँ प्राणिमात्रक जीविका चलैछ। अतएव जीवनधारण करए हेतु अन्न आ जल जीवमात्रक हेतु आवश्यक आवश्यकता थीक। परंच 'सब दिन होहि न एक समान'। कोनहु-कोनहु वर्ष अन्नक अभाव अत्यन्त आतंकित कए दैछ। द्रव्यहुसँ ओ नहि प्राप्त होइछ यद्यपि 'द्रव्येषु सर्वे गुणाः'। उपजा देश छोड़ि दैछ। अन्न लेल हाहाकार मचि जाइछ। सब दाना-दानाक लेल तरसैछ। भीखो भेटब दुस्तर भए जाइछ। दीनताक दयनीय दशाक विकराल रूप उपस्थित होइछ। इएह दुर्भिक्षक समय कहबैछ अकाल।

एहि दुर्भिक्षक कारण अछि वर्षा। वर्षे भारतसन कृषिप्रधान देशक हेतु प्राणरक्षक आ भक्षक अछि परंच एकर कोनो ठेकान नहि। कहियो ई आदिमे ततेक पानि देत जे सब नाकोदम भए जाएत मुदा आगाँ चलिकए तेहन रौदी करत जे बीआपर्यन्त घरहि रहि जाएत। यदि केओ कतहु खसएबो करत त ओ जरिकए भस्म भए जाएत। तैँ उपज नहि होएत। कोनहु वर्ष पानि पड़ैछ कम। उपज कात रहओ, पीबहु हेतु पानि नहि प्राप्त होइछ। एहि समयमे अन्नक आशा करब अन्याय थीक। यदि कहिओ किछु पानि भेबो कएल त जरल जमीन जल सोखि लैछ। फलतः, स्थिति तथा यथाक रहि जाइछ। कहियो-कहियो ततेक पानि होइछ जे बाढ़ि आबि कए लगलो फसिल नष्ट कए दैछ। एतबए धरि नहि, कहियो-कहियो टिड्डी दलकदल आबि कए लागल अन्न पर बैसिकए दाना-दाना चुनिलैछ जाहिसँ अन्नक अन्त भए जाइछ। युद्धकालमे एकर रूप सबसँ विकराल भए जाइछ। फलतः, लोकक जान संकटमे पड़ि जाइछ। ओहि समयमे प्राणरक्षामे लागल कृषक झखैत रहैछ। एहि लेल कृषि दिशिसँ लोक हतोत्साह भए जाइछ।

एकर असर बड़ विचित्र होइछ। मुख्यतः निर्धन व्यक्ति मारल जाइछ परंच धनी सहित सुखी नहि रहि सकै छथि। चिन्तित, भयभीत आ व्याकुल व्यक्तिक दशाक अवलोकनसँ ओहो त्राहि-त्राहि करै छथि। खेत-पथार कात जाओ, अपन प्राण, सन्तान पर्यन्तकेँ बेचि लेबापर परिवार उद्यत भए जाइछ। अन्नक अभावमे लोक माँटि, झिटुका, गाछ छाल आ पातपर जान दैछ। एहि अकालक दृश्य कोन व्यक्तिक हृदयमे दया नहि उत्पन्न करैछ?

अन्नहीन आ क्रियाहीन व्यक्तिकेँ केओ चीन्हि जा सकैछ। सुखाएल देहमे मांस कहाँ? हड्डी झकझक करैछ। बूझि पड़ैछ जे कटला पर एको बुन्द शोणित नहि खसि सकैछ। देखलापर सब भुतचट्ट देखि पड़ैछ। पेट खाली, पीठ उगल ओ रीढ़ जागल, आँखि धसल, गाल चोटकल आ मुँह सुखाएल दीनताकेँ प्रत्यक्ष करैछ। अन्नहीन आ वस्त्रहीन व्यक्ति कलकलीसँ व्याकुल रहैछ। चिन्तित जनता उत्साहहीन, साधनहीन भेल पेटक ज्वाला शान्त करए हेतु नीचो-सँ-नीच कर्म करए पर तुलि जाइछ। स्वार्थ सबकेँ आन्हर कए दैछ। सन्तानकेँ अन्न देब दूर जाओ, ओकरा बेचिकए भूख दूर करबाक हेतु लोक उतारू भए जाइछ। भूखे डाउँ-डाउँ कएनिहार परिवारक व्यक्ति भूखल डाइन-सदृश क्रोधान्ध भेल धीयापूताकेँ पीटैछ आपसमे झगड़ा-झाँटी करैछ। एहिसँ दिन-राति महाभारत मचल रहैछ। एहि सदृश परिवारक स्थिति महाकारुणिक भए जाइछ।

अकालसँ अनेको हानि होइछ। कृषि मारल जाइछ। लोक अन्न लेल लल्ल रहैछ। सबठाम लाला छी-छी होइछ। कृषक उद्यमसँ विरत भए चिन्ताग्रस्त जीवन व्यतीत करैछ, जाहिसँ अग्रिम वर्षक कृषिपर्यन्तकेँ क्षति पहुँचैछ। उदरीकेँ भरए हेतु लोक चोरी, डकैती, लूटि-मारि आदि घृणित आ नीच कार्य दिशि लपकैछ। सामाजिक स्थिति अशांत भए जाइछ। निर्धन परंच अस्वस्थ व्यक्तिक चिकित्सामे बाधा पड़ैछ। गरीब व्यक्ति अपन नेनाभुटकाकेँ पढ़ाएब स्थगित कए दैछ। राष्ट्रक समक्ष खाद्यान्नक विकट समस्या उपस्थित भए जाइछ। खाद्य-सामग्री जुटएबामे सरकार व्यस्त भए जाइछ। सरकारकेँ अन्य विदेशी सरकारसँ दान आ भिक्षा लए देशवासीक समस्या सोझराबए पड़ैछ। अनका आगाँ हाथ पसारने आत्मसम्मानकेँ धक्का लगैछ, आ अनकर कृतज्ञ होमए पड़ैछ। नैतिक पतन भए जाइछ। फलतः, राष्ट्रीय रचनात्मक प्रगति रुकि जाइछ।

एहि शत्रुकेँ दूर करबाक अनेको उपाय अछि। अन्नक सङसङ सागपात, तरकारी, फल-मूल आदि भक्ष्य पदार्थक उत्पादनमे वृद्धि होएबाक चाहि। सरकारी पंचवर्षीय योजनाक अनुसार कृषिक वैज्ञानिक रूप अपनाएब उचित थीक। जलक अभाव मेटएबाक लेल इनार कोड़ाएब, पोखरि खनायब, नहरि खनाएब आ बान्ह बन्हाएब आवश्यक होइछ। एहिसँ जलक नियंत्रणमे सहायता भेटैछ। कम्पोस्ट आदि सस्त खाद बनाओल जाए आ ओ प्रयोगमे आनल जाए। परती- पराँत भूमिकेँ कृषियोग्य बनाओल जाए। द्रव्योपार्जनक हेतु आनोआन उद्योगकेँ प्रश्रय देल जाए जाहिसँ कृषियोग्य कृषिउद्योगमे सहायता भेटए।

अकाल महासंहारकारी थीक। एहिसँ जान जोखिममे रहैछ। राष्ट्रोन्नतिमे बाधा उत्पन्न होइछ। अतएव एकर सामना-हेतु अन्नक व्यवस्था करब परमावश्यक अछि। अन्यहुँ देशसँ आनिकए समस्या सोझराओल जाए मुदा ओकर वितरण-हेतु सुव्यवस्था हो। नियन्त्रण चालू रहए जाहिसँ चोरबाजारी बन्द हो। राशनिंग-पद्धति लागू हो। अन्नक अपेक्षा सागपात, तरकारी, फलमूल, माछ-मांसक व्यवहारहेतु ओकर उत्पादनमे वृद्धि हो। कृषिकार्यक हेतु कृषककेँ कर्ज देल जाय। दीन-हीन व्यक्तिकेँ खैरात भेटए। धनी संस्था आ धनी व्यक्तिक कर्त्तव्य जे ओ एहि समयमे जनताजनार्दनक पूजामे पूँजीक सदुपयोग करथि। जनता सरकारक सहयोग करए जाहिसँ अकालक सामना करब सुलभ भए जाए।

□□□

बाढ़ि

जलक स्वभाव अछि जे ओ नीच दिशि होइत बहत। तैँ साधारणरूपेँ जल रहने धार आ नदीक पानि किनहेरिक बीच घेरल रहैछ मुदा विशेष समयमे विशेष कारणसँ धारमे अधिक जलक आगमन होइछ। फलतः, ओकर किनहेरिसँ जल ऊपर आबि जाइछ। इएह अतिरिक्त जल धारक कातक घर, आङन आ खेत-पथारमे पसरि जाइछ। अतिरिक्त जलक इएह प्रसार थीक बाढ़ि। वस्तुतः, ई प्राकृतिक देन थीक। एकर आगमनक समय थीक वर्षाऋतु।

कहियोकाल मूसलाधार पानि पड़ैछ। अधिक पानिकेँ धार अथवा नदी रोकि रखबामे असमर्थ भए जाइछ। अतएव अतिरिक्त जल चारूकात पसरि जाइछ। कहियोकाल पर्वतशिखरपरहक बर्फ वायुक झोँकसँ पघिल जाइछ। एहि हेतु जलक परिमाणमे वृद्धि भए जाइछ। धारक पेट उत्थर भएने थोड़बो जल बढ़ने पानि उछलि जाइछ। एहि सब कारणसँ उत्तर बिहार अर्थात् मिथिलामे कमला आ कोशी नदीमे बड़ बाढ़ि अबैछ।

बाढ़िक समयमे पानि चारूकात दहोबहो भए जाइछ। घर-आंगन सबठाम पानि प्रवेश कए जाइछ। पानि धारक सबलतासँ आ पानिक धक्कासँ माटि आ खढ़क घर साधारणतया खसि पड़ैछ आ बाढ़िक पानिक संग बहि जाइछ। केवल उच्च स्थानपर बनल भवन आ पक्का मकान जलसँ घेराइयो कए ठाढ़ रहैछ। बाढ़िक धार ततेक तेज होइछ जे गाछ-वृक्षकेँ जड़िसँ उखाड़ि, काठ आ लोहक पुलकेँ नापता बनाकए, असम्भावित भूभागदए नासी फोड़िकए कल्लोल करैत बहैछ। नजरि दौड़ओलासँ बूझि पड़ैछ जे समुद्र चारूकात विराजमान भए गेल हो। बाढ़िक प्रवाहमे भसिआएल घरक चारपर बैसल मनुष्य, उबडुब करैत मालजाल आ बहैत वस्तुजातकेँ देखि ककर मन नहि व्याकुल भए जाइछ। ताहिपर यदि बाढ़ि सुनसान रातिमे एकाएक आबि जाइछ त सब जीवक जान जोखिममे पड़ि जाइछ।

बाढ़ि लोककेँ बड़ कष्ट पहुँचबैछ। घर-आङन टापू भए जाइछ। जीव-जन्तु जानसँ हाथ धोइछ। माल-मवेशी खतरामे पड़ि जाइछ। लोक गृहविहीन आ धन-हीन भय जाइछ। घरसँ बाहर होएब पर्यन्त मुश्किल भए जाइछ। खेत-पथारक उपजल अन्न दहा जाइछ। अकाल विकराल रूप बनाकए देश पर टूटि पड़ैछ। फलतः, गृह-विहीन जनता अन्नक हेतु तरसैछ। भुखमरी डेग-डेगपर मुँह बौने ठाढ़ भेल देखि पड़ैछ। रोग-व्याधि बाढ़िग्रस्त क्षेत्रकेँ अपन नैहर बना लैछ। गाछ-वृक्ष, जंगल-झाड़ सब किछु बाढ़िक कारण नष्ट भए जाइछ। सब तरहेँ मनुष्यक दशा दर्दनाक बुझि पड़ैछ।

बाढ़िसँ लाभ होइछ। बाढ़िक नवीन जलमे पाँक मिलल रहैछ। तैँ जेम्हर देने बाढ़िक पानि पसरैछ, तेम्हर-तेम्हर पाँक पड़ैछ जे उपजाक लेल अमूल्य खादक काज करैछ। भूमिक उर्वराशक्ति बहुत अधिक बढ़ि जाइछ। देहातक कुड़ा-करकट, अचरा-कचरा, छाउर-गोबर आदि सब दुर्गन्धि पसारनिहार वस्तु बहि जाइछ। सुखाएल पोखरि-झाँखरि भरि जाइछ जे जलक भण्डार बनि लाभप्रद प्रमाणित होइछ।

एहि बाढ़िकेँ नियन्त्रण कएल जा सकैछ। कला आ कोशी नदीक सदृश बाढ़ि अननिहार नदीक तटबंदी कएल जाय। धारक समीपमे मजबूत बान्ह बान्हल जाए जाहिसँ बाढ़िक पानि ओहि बीचहिमे घेरा कए आगू बहए। ओहि

पानिक समुचित निकास हेतु नहरि बनक चाही जाहिसँ बाढ़िक अनावश्यक जल नहरि दए बहि कए दूरधरि पसरि जा सकए। कल-कारखाना चलएबाक लेल जलविद्युतक निर्माण कएल जा सकैछ। एहि सब उपायसँ बाढ़िक प्रकोप किछु घटाओल जा सकैछ जाहिसँ जल उत्पात मचा नहि सकैछ। यदि सावधानीसँ बाढ़िक नियंत्रणमे सफलता भेटि जाए त बाढ़ि हितकारक भए जाएत।

अत: स्पष्ट अछि जे बाढ़ि हानिकारक आ लाभप्रद दुनू अछि। यदि ओकर उत्पातक नियन्त्रण कएल जाए त नोकसानक स्थानपर लाभेलाभ भेनिहार थीक। मुदा नियन्त्रण कठिन कार्य थीक आ एहिमे अधिक व्ययक काज पड़ैछ। ई व्यय ने केवल सरकारे कए सकैछ आ ने केवल जनता। दुनूकेँ मिलिजुलि कए कार्य कएलासँ सफलता भेटब सुगम भए जाइछ। शारीरिक श्रमदाम दए जनता सरकारक सहयोग कए बाढ़िकेँ काबूमे आनिकए समाज आ देशक संग राष्ट्रक महान् उपकार करबाक भागी भए सकैछ। तेँ सबहि व्यक्तिक आ सबल संस्थाक पावन कर्त्तव्य होइछ जे ओ यथासाध्य बाढ़िग्रस्त जनता आ जीवकेँ सहायता प्रदान कए देशहितसाधनामे सहयोगी बनथि।

□□□

पुस्तकालय

पुस्तकालय ओ आलय थीक जाहिमे सर्वसाधारण जनताक अध्ययन लेल पुस्तक संगृहीत रहैछ। ई ज्ञानदान देनिहार सरस्वती-मंदिर थीक जतय वरदान पाबि लोक विद्वान् बनैछ। समाजक संचित ज्ञानकोषक अध्ययन आ मनन करए हेतु ई साहित्यिक सदन थीक। एतहि सभ्यता आ संस्कृतिक ज्ञानराशि सुरक्षित भेटइछ जकर आलोक पाबि सब व्यक्ति अपन सुषुप्त संस्कारकेँ सजग बनाएबामे समर्थ होइ छथि। ई विद्याक कल्पलता थीक जकर सेवी मनोभिलिषित फल पाबि अपन बिशिष्टताक विकास करैछ। एहेन आनन्दोद्यान अन्यत्र कतए? एहिमे विकसित ज्ञानसुमनक सौरभसँ जनमनरंजन होइछ। ई अछि शान्तिक आगार जतए अतृप्त, अशान्त, असफल, असमर्थ आ अनाश्रित व्यक्ति चारु चमत्कारसँ प्रफुल्लित भए प्रशान्त प्रकाश प्राप्त करैछ। मननशील मनुष्यक हेतु ई मानसिक भोजनक आलय थीक जतय भव्य भावनाक मंजुल मालाक दिव्य दाना देखि सबहि सदस्य सार्वभौम समाधानक साधनासँ सर्वथा संतुष्ट भए आलोककेँ प्रसारित करैछथि। ई थीक शिक्षाक सबल स्त्रोत जकर ज्ञानामृत पान कए मानव परम प्रसन्न होइछ। इएह थीक जिज्ञासाकेँ पूर्ण कएनिहार ज्ञानक निर्मल निर्झर जकर कलकल ध्वनिमे साहित्य, संगीत आ कलाक उदय होइछ। ई थीक व्याकुल बटोहीक वास्ते विश्रामस्थल, जतय सत्वर सफलीभूत होबय हेतु विशिष्ट विद्वान्क विमल विषयविभूति बूझि ओ आनन्दविभोर भय जाइछ। ई थीक मनोरंजनक सर्वोत्तम साधनाक स्थल जतय सदस्य साहित्य, संगीत, नृत्य, वाद्य आदि विविध विषयक साधनासँ आधिव्याधिकेँ तिलांजलि दए वातावरणमे बिहार करैछ। साहित्यिक व्यक्तिकेँ समय बितएबाक लेल ई संबल थीक जाहिसँ ओ प्रवचन, भाषण, कवितापाठ, संगीत आ अध्ययनमे लागल अपन समय बितबै छथि। वस्तुतः, ई एक छोटछीन विश्वविद्यालय थीक जतय गागरमे सागर भरल रहैछ।

पुस्तकालयक चारि भेद अछि, यथा- (1) निजी, (2) सार्वजनिक, (3) शिक्षणसंस्थासम्बन्धी आ (4) भ्रमणशील। निजी पुस्तकालयक प्रबन्ध आ संचालन संस्थापक अथवा हुनक सम्बन्धीक द्वारा होइछ। ओहिसँ आम जनताकेँ लाभ नहि होइछ। वस्तुतः, एहि प्रकारक पुस्तकालयक स्थापनाक कारण थीक स्वाध्यायक हेतु सामग्रीक संचय, अन्वेषण आ अनुसंधानक मार्गप्रदर्शनमे सहायता देनिहार साधन। तथापि विशिष्ट उपस्थित व्यक्तिकेँ लाभदायक सिद्ध होइछ। सार्वजनिक पुस्तकालय जनताक द्वारा सरकारक सहायतासँ स्थापित होइछ अथवा स्थापित भेलापर सरकारी सहायता पाबि सर्वांगीण समुन्नत भय साधारण सदस्यकेँ सहायता दैछ। वस्तुतः, एहिसँ लोक अत्यन्त लाभ उठा सकैछ। शिक्षणसंस्थासंबन्धी पुस्तकालयक स्थापना संस्थाक सदस्यक हेतु होइछ। अतिरिक्त व्यक्तिकेँ एहिसँ लाभ थोड़ होइछ। भ्रमणशील पुस्तकालयक स्थापना सरकार द्वारा होइछ। पैघ-पैघ शहरमे एकर व्यवस्था अछि। निश्चित तिथि पर शहरक विशिष्ट भागमे पुस्तकालय मोटरगाड़ी पर भ्रमण करैछ आ अभीप्सित ग्रन्थक आदान-प्रदान कए अपन स्थान पर चल जाइछ। एहिसँ नगरक थोड़ व्यक्तिकेँ लाभ होइछ।

पुस्तकालयक आवश्यकता डेग-डेगपर देखि पड़ैछ। कारण अभ्युदयमात्रक मूल शिक्षा थीक। ओकर तीनटा स्त्रोत अछि, यथा-1) प्रकृति, (2) संगीत आ (3) पुस्तक। सबहि व्यक्ति एक समान नहि होइछ आ ने सबठाम सब व्यक्तिकेँ समानरूपेँ स्वतन्त्र, शान्त आ सुन्दर प्राकृतिक वातावरण प्राप्त होइछ जतय ओ प्राकृति सुषुमाक अवलोकनक संग ओकर उत्पत्ति, विकास आ अवसानक अंन्दाज पाबि सकए आ स्वानुभूतिक बलेँ ज्ञानवान् बनए। यद्यपि सत्संगति सुलभ देखि पड़ैछ तथापि ओकर सुअवसर सबकेँ नहि भेटैछ आ ने सब ओहि सम्पर्कमे आबि अपन त्याग आ तपस्याक जीवन अपनाकए सत्संगतिक महिमाक, गौरवगरिमाक मर्यादा राखि स्वयं लाभान्वित भए सकैछ। परंच पुस्तक सब व्यक्तिक समानरूपेँ आदर कए ज्ञानक आलोक प्रदान करैछ। एहि तरहक महत्त्वपूर्ण पुस्तक सबकेँ सबठाम आ सदरिकाल प्राप्त होएब कठिन अछि। ओ सुलभरूपेँ प्राप्त होइछ पुस्तकालयमे। अतएव पुस्तकालय सर्वसाधारण व्यक्तिक शिक्षाक केन्द्र बनैछ। मुख्यतया एहि देशक हेतु ई आओर महत्त्वपूर्ण अछि। कारण, देश अछि निर्धन, निवासी अधिकतर निरक्षर, सामाजिक आ साम्प्रदायिक स्थिति असमान, परंच प्रगतिशील देशक संग पएर बढएबाक लेल विश्वक ज्ञान, विज्ञानक परिचय पाएब परमावश्यक अछि। एकर एकमात्र साधन थीक सार्वजनिक पुस्तकालय। एतय सब व्यक्ति अध्ययन आ अनुशीलनसँ अत्यन्त लाभान्वित होइ छथि। वस्तुतः, पुस्तकी भवति पण्डितः' उक्ति अक्षरशः सत्य अछि, कारण युग-युगक सभ्यता आ संस्कृतिक ज्ञानदाता इएह थीक। गणतन्त्र देशमे सबहि देशवासीकेँ उन्नति करबाक समान अधिकार प्राप्त करएबामे सबसँ पैघ सहायक इएह थीक। एहिलेल ई आवश्यक अछि।

पुस्तकालयक प्रबन्ध हेतु एक समिति रहैछ। एकर संचालन हेतु ग्रन्थागारिक आ अन्य रक्षक रहैछथि। एकर खर्चबर्चक हेतु आयक उद्गम थीक सदस्यक चन्दा, महान् आ उदार व्यक्तिकेर दान आ कार्यपालिका अथवा नगरपालिकाक सहायता आदि। एकरा सुव्यवस्थित राखए हेतु खुजबाक आ बन्द होएबाक समय निश्चित रहैछ। पुस्तकक श्रेणी विभाजित रहैछ, जाहिमे विशिष्ट श्रेणीक पुस्तक सबहि व्यक्तिकेँ नहि भेटि सकैछ। विशिष्ट ज्ञान-प्राप्तिहेतु इच्छुक व्यक्ति पुस्तकक मूल्य जमा कए ओ पुस्तक लए कार्य करै छथि आ आपस कएलापर मूल्य वापस लए सकै छथि। अतएव सुचारूरूपेँ संचालनहेतु नियमक पालन करए पड़ैछ।

वाचनालय एकर एक मुख्य अंग थीक। एहिमे देश-विदेशक पत्र-पत्रिका संगृहित रहैछ। ओकर अवलोकनसँ पाठक विभिन्न समाचार ज्ञात कए सकै छथि। एतय एक सभाभवन रहैछ। समय-समयपर विशिष्ट व्यक्तिक प्रवचन आ भाषणसँ जनता लाभ उठबैछ। संगीतालय अधिक ठाम एकर अंग रहैछ। ओकर सामयिक प्रदर्शनसँ जनताक मनोरंजन होइछ।

पुस्तकालयसँ अनेक लाभ होइछ। ज्ञानक वृद्धि होइछ। साहित्यिक साधना आ संगीतक शुभावसर भेटैछ। पुस्तकावलोकनसँ ज्ञानचक्षु खुजैछ। जाहिसँ आत्मपरिचय आ आत्मविकासमे अवर्णनीय सहायता भेटैछ। युगयुगक

संचित आ सुरक्षित सत्संगक संग इतिहासक अध्ययनसँ जनताकेँ जीवनक जानकारी प्राप्त होइछ। समाजमे संस्कृतिक जानकारी आनएमे पुस्तकालयसँ बड़ लाभ होइछ। अवकाशक समयमे पढ़ल-लिखल व्यक्ति सुविधासँ महान् व्यक्तिक समीप बैसि समय बिता लैत छथि। एक विचार एक भाव आ एक प्रकृतिक उदय कए पुस्तकालय एकताक भावकेँ दृढ़ करैछ। नागरिकताक प्रचार आ प्रसारमे सहायता भेटैछ। निरक्षरताक निवारण होइछ।

अत: स्पष्ट अछि जे एकर महत्त्व बड़ पैघ अछि। अतएव एकर सुरक्षा-दिशि सबहक ध्यान होएब आवश्यक अछि। एहि पवित्र आलयमे दुरुपयोग आ दुर्व्यवहारकेँ स्थान नहि भेटए मुदा सदुपयोगक ई स्थान सदन, साधन ओ साधक हो। एहि हेतु सरकार आ जनताक सहयोग सापेक्ष अछि। सार्वजनिक पुस्तकालयक स्थापना आ सदुपयोगसँ समाज, राष्ट्र आ देशक कल्याण निश्चित अछि। अतएव एकरा प्रोत्साहन देब सबहक कर्त्तव्य थीक।

□□□

वसंत ऋतु

यद्यपि विश्वभरिमे भौगोलिक आधारपर ऋतु चारि मानल जाइछ तथापि भारतवर्षमे ओ छौ अछि-ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, हेमन्त आ वसन्त। जेठसँ प्रारम्भ भए वैशाख तक सब ऋतुक चक्र पूरा भए जाइछ। ऋतुराज वसन्त चैत्र आ वैशाखमे सुन्दर साजसज्जा धारण कए अपन दलबलक संग विराजमान रहै छथि।

एहि ऋतुक आगमनसँ पूर्व सी-सी करैत शिशिर सबकेँ शिथिलित कए दैछ। धनिक-गरीब सबहक हाड़केँ हिलोनिहार, धीयापूताक स्वच्छन्द क्रीड़ामे बाधा देनिहार जाड़ जीवजन्तुकेँ ताहि तरहेँ जकड़ि लैछ जे ओकर अन्त असम्भव देखि पड़ैछ। परंच परिवर्त्तनशील जगत्मे स्थायी रहनिहार के? काल हिनकहु हँसा-खेलाकए गाल-तर दाबि लैछ।

प्रकृति अपन उजड़ल आ उखड़ल स्वरूपक परित्याग कए नवल वसन धारण करैछ। कोमल किसलय, मृदु मंजरिक हेमहार, रंगबिरंगक प्रफुल्लित पुष्प, शीतलमद-सुगंध समीर, भ्रमरक गुंजन, कोकिलाक तान, ऋतुराजक आगमनक सूचना दैछ।

एहि ऋतुमे ग्रीष्मा सदृश ताप नहि, वर्षाक झड़ी नहि, शरदक शीत नहि, हेमन्तक पाला नहि आ शिशिरक जाड़ नहि, एकर विशिष्टताक सम्बन्धमे महाकवि कालिदासक श्लोक श्लाघनीय अछि-

सुलभसलिलावगाहाः पाटलसंसर्गसुरभिवनदाताः

प्रच्छायसुलभनिद्राः दिवसांपरमरमणीयाः।।

वस्तुतः, एहि समयमे सब ठाम नवजीवन, नवल उत्साह आ नूतन उमंग देखि पड़ैछ। अपन अलौकिक प्रतिभा आ प्रभुताक बलें सबकेँ सुख, शान्ति आ सुविधा प्रदान कएनिहार वसन्त ऋतुराज कहबै छथि।

एहि ऋतुमे प्रकृति सुन्दर स्वरूप धारण कए उपस्थित होइछ। एहि समयमे गाछ-वृक्षमे नवपल्लव लगैछ। आमक गाछमे मंजुल मंजरि देखि पड़ैछ। सरिसवक पीअर-पीअर, तीसीक नील आ कुसुमक लाल-लाल फूल उद्यानक विभिन्न रंगक पुष्पक संग अवनीक आँचरकेँ अनुपम करैछ। स्वच्छ सरोवरक अमृतसदृश निर्मल जलमे क्रीड़ा करैत कमलक कमनीय कली कुटिल कटाक्षसँ दर्शकक मनकेँ आकृष्ट कए अपूर्व आह्लादकता उत्पन्न करैछ। फलतः, उत्फूल्ल उरमे उल्लास आ उमंग उमड़ि पड़ैछ। उद्यानमे उपस्थित उत्फुल्ल लवङ् गलता, खलखल हँसैत, जूही चमचम करैत, चम्पा, चमेली, बेली आ कचनार। सुरभिसँ अन्ध बनबैत इन्द्रकमल, कामिनी आ रजनीगंधा, स्वागत करैत गुलदाउदी, चन्द्रकला आ प्रफुल्लित पुष्पराज गुलाब वायुमण्डलकेँ आमोदित कएने रहै छथि। वस्तुतः, उद्यानक छवि-छटा देखि सब मुग्ध भए जाइछ। एहि समयमे आकाशक रूप रमणीय देखि पड़ैछ। बिहारी-लालक उक्ति कतेक सुन्दर अछि-

छकि रसाल सौरभ सने, मधुर माधवी गंध।

ठौर-ठौर झूमत झपत बौर झौर मधु अन्ध।।

रनित भृंग घंटावली, झरत दान मधु नीर।

मन्द-मन्द आबत चल्यौ, कुंजर कुंज समीर।।

मानवक हेतु ई ऋतु आनन्द आ उल्लासँ पूर्ण रहैछ। सबहक हृदयमे उत्फुल्ल उमंग उमड़ि पड़ैछ। शरीरमे सुन्दर स्फुर्ति समा जाइछ आ मनमे मनोरम मस्ती लक्षित होइछ। मधुर मलयानिल, सुन्दर सुगन्धि, मधुपक मनमोहक गुंजन, कोकिलक कोमल एवं मर्मस्पर्शी आलाप, प्राकृतिक छटा कखन ककर मन नहि मोहि लैछ। मुग्ध मानवक हृदयमे नव कल्पनाक कमनीयता माधुर्यमे शराबोर भए भव्य भावना जगा दैछ। जीवनलता अनुपम आभासँ आभूषित भए उन्मुक्त वातावरणमे लहलहा उठैछ। हास-विलास आ आमोद-प्रमोद मानवजीवनकेँ मधुमय मनोहरता प्रदान करैछ। वसन्तपंचमी आ फगुआ बनि मानवमनमे अनिर्वचनीय आनन्दक सृजन करैछ। मन्मथक बाणसँ मानस मस्त देखि पड़ैछ। सबहि व्यक्तिक मुखमण्डलपर अनुपम आभाक आभास भेटैछ। फलतः, सरसता निस्सार जीवनकेँ सरस बनाकए अवनीकेँ स्वर्गहुसँ सुन्दर स्थलमे परिवर्त्तित कए दैछ।

सरोजनी नायडुक उक्ति केहन मार्मिक आ उपयुक्त अछि-

The earth is ashine humming bird's wing.
And the sky like a king-fisher feather.
O, come and let us play with the spring.
Like glad-hearted children together.

एहि ऋतुमे कविक कल्पना भव्य भावँक साज साजि सुन्दर सृष्टिक सृजन करैछ जकर सौन्दर्य अनुभव कविक हृदयोद्‌गारसँ स्पष्ट होइछ।

□□□

एक महापुरुषक जीवन चरित-महात्मा गाँधी

'होनहार विरवानके होत चिकने पात'। अत: महापुरुषक जीवनमे बाल्यावस्थासँ विशिष्टताक झलक देखि पड़ैछ। हुनक एक आदर्श रहैछ। इएह कारण अछि जे ओ हजारमे गोटेक होइछथि। सादा जीवन, उच्च विचार, अध्यवसाय तथा प्रतिभा महापुरुषक जीवनकेँ जगमगौने रहैछ। बाधा-विघ्न हुनक जीवनक गुप्त आ सुषुप्त गुणकेँ चमका दैछ।

भारतभूमि वीरवसुन्धरा तथा रत्नगर्भा अछि। एतय अनेक महापुरुष जन्म ग्रहण कए अपन समाज, देश आ राष्ट्रक नाम समुज्ज्वल कएल अछि। आधुनिक युगमे महात्मा गाँधी एक आदर्श महापुरुष भए गेल छथि।

धन्य अछि काठियावाड़ जिलाक पोरबन्दर नामक स्थान जतय 2 अक्टूबर, 1869 ई0 के गाँधीजीक जन्म एक विशिष्ट परिवारमे भेलनि। हिनक पिता करमचन्द गाँधी पोरबन्दर आ राजकोट रिआसतक दीवान छलाह। हिनक माए पुतलीबाई धर्मप्राण नारी छलीह व्रत, उपवास आ ईश्वरभक्ति हुनक जीवनक प्रधान अंग छल।

गाँधीजीक प्रारम्भिक शिक्षा राजाकोटमे प्रारम्भ भेल। आरम्भमे ई एक साधारण छात्र छलाह तथापि सत्यवादी रहथि। ओ चोरिसँ कात रहथि मुदा कुसंसर्गमे पड़ि अधलाह कार्य कएलापर प्रकट कए देल आ पितासँ क्षमा पाओल। पिताक समीप रहि विभिन्न धर्मक व्यक्तिक गपसप सूनि सर्वधर्म-समन्वयमे हिनक आस्था जड़ि जमा लेलक।

उच्च विद्यालयमे ई प्रतिभाशाली भए गेलाह। इंट्रेन्स परीक्षोत्तीर्ण भेलापर ई शिक्षा प्राप्तिहेतु विलायत गेलाह। 1891 ई0 मे बारिष्टर भए स्वदेश आपस अएलाह। विलायतमे हिनक जीवन संयमित छल। माछ, मांस आ माउगिसँ ई दूर रहलाह।

सोलहम वर्षक अवस्थामे हिनक विवाह भेल। हिनक स्त्री, कस्तूरबा, हिनक जीवनसंगिनी छलीह। ओ जेलपर्यन्तमे हिनक संग धएल। बम्बईमे ई बारिष्टरी आरम्भ कएल मुदा पूर्ण सफलता नहि पाओल। एक व्यापारीक कार्यसँ 1893 ई0 मे अफ्रिका गेलाह।

ओतए प्रवासी-भारतीय जनताक अपमान हिनका असह्य भए गेलन्हि। अत: ई लोकक कष्ट-निवारणहेतु सत्याग्रह आरम्भ कएलनि। फलत:, सरकारकेँ झुकए पड़लैक। ओ प्रवासी-भारतीय जनताक प्रति अपन व्यवहारकेँ बदललक।

1915 ई0 मे अपन परिवारक संग गाँधीजीक स्वदेशक यात्रा कएलनि। भारत आपस अएलापर जनताक द्वारा हिनक पूर्ण स्वागत भेल। जनता हिनका अपन नेता चुनलक। बिहार राज्यमे चम्पारण जिलामे नीलक खेती कएनिहार व्यक्तिक प्रति सरकारक अत्याचार बढ़ल। गाँधीजी सत्याग्रह कए सरकारकेँ झुकाओल। फलत:, अत्याचार रुकल। अहमदाबादमे मजदूर-समस्या उपस्थित भेल। गाँधीजी अहमदाबाद आबि समस्याकेँ सोझराओल। जलियाँवालाबागक गोलीकाण्ड तथा हत्यासँ क्षुब्ध जनता आन्दोलन प्रारम्भ कएलक मुदा गाँधीजी बन्द कराओल। लोकमान्य तिलकक मृत्युक पश्चात् देशक नेतृत्व गाँधीजी कएलनि।

1929 ई0 मे अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ भेल। 1922 ई0 मे हिनका कारावास भेलनि। दू वर्षक उपरान्त हिनका ओहिसँ मुक्ति भेटलनि। 1924 ई0 मे ई भारतीय काँग्रेसक अध्यक्ष भेलाह। दिल्लीमे हिन्दू आ मुसलमानक बीच दंगा भेल। महात्माजी ओकरा शांत कए प्रायश्चित्तमे 21 दिन उपवास कएलनि। 1930 ई0 मे नोनक कानून भंग करए हेतु सत्याग्रह कएलापर हिनका कारावास भेलन्नि। ओतहिसँ हरिजन-आन्दोलन प्रारम्भ कएल। यूरोपीय महायुद्धमे भाग लेबासँ ई भारतवासीकेँ रोकल। अत: 1942 ई0 मे पुन: हिनका कारावास भेल। निरन्तर युंद्ध चलैत रहल। अन्तत: 15 अगस्त 1947 ई0 मे भारत स्वतन्त्र भेल। नोवाखालीमे हिन्दू-मुसलमानक झगड़ा भीषण रूप धएलक। महात्मा गाँधी एकता आनक प्रयास कएलनि।

हिनक नीतिकेँ नहि बूझि 30 जनवरी, 1948 ई0 मे प्रार्थनाक हेतु जएबाकाल नाथूराम गोडसे हिनका पर गोली चलओलक। फलत:, हिनक जीवन-दीप मिझा गेल। देश शोकसन्तप्त भए उठल।

महात्माजी केवल राष्ट्रीय नेता नहि प्रत्युत आध्यात्मिक पथप्रदर्शक सेहो छलाह, हिनक सत्य-अहिंसाक अमोघ अस्त्र युद्धक दुगुर्ण एवं रक्तपातसँ बचओनिहार अछि आ अछि महान शक्तिकेँ झुकओनिहार। हिनक लेखनी आ वाणिमे अलौकिक शक्ति छल जकर फलस्वरूप सम्पर्कमे अएनिहार व्यक्ति अवश्य झूकि जाइत छलाह। सत्य, अहिंसा, देशभक्ति, परोपकार आदिक भव्य भावसँ विभूषित महापुरुष छलाह ई। शान्ति स्थापना आ लोककल्याणक हेतु त्यागी आ तपस्वी महात्माजी भारतमाताक पएरक बेड़ीकेँ तोड़निहार आ स्वतन्त्राक स्वागत कएनिहार छलाह।

भारतवासीक सर्वांगीण उन्नतिहेतु रामराज्यक रूपेरखा उपस्थित कएनिहार आ विश्वशान्तिक अग्रदूत विश्वबन्द्य बापू छलाह। ई युगनिर्मित नहि युगनिर्माता छलाह आ आत्मा नहि परमात्मा छलाह। एहि पुत्ररत्नकेँ पाबि भारतमाता धन्य छथि, कृतकृत्य छथि।

□□□

ग्रामपंचायत

भारत स्वतन्त्र भेल। स्वतन्त्राक लहरि नगरसँ गामधरि पसरल मुदा वास्तविक आनन्द कतए? वस्तुतः, एकर प्राप्ति तहिखन सम्भव जखन गाम स्वतन्त्र हो अर्थात् गाम स्वावलम्बी बनए। चाहे कार्य छोट हो अथवा पैघ मुदा सब यदि गामहिमे सम्पन्न हो त गामकेँ बाहरी आशामे नहि रहए पड़तैक। तहिखन रामराज्यक साकार रूप होएत ग्रामराज्य। अतएव ग्रामपंचायतक स्थापना गाम-गाममे आवश्यक अछि जाहिसँ गाम अपन सब मोकदमा अपनहि देखिकए निबटारा कए सकए।

ग्रामपंचायतक स्वरूप कोनो नवीन नहि। अँगरेजी शासनव्यवस्थापक संग कचहरीक स्थापना भेलापर एकर कार्य मन्द पड़ि गेल, मुदा आब स्वतन्त्र देशमे सन् 1947क अधिनियम पंचायतक आधार बनल।

एकर सफलताक लेल ग्रामपंचायत बोर्डक स्थापना कएल गेल अछि। निर्देशक तथा उपनिर्देशकक अतिरिक्त मंडल-पंचायत पदाधिकारी एवं अनुमण्डलीय निरीक्षकक नियुक्ति भेल अछि। साधारणतया एक पंचायतमे 2000 जनसंख्या रहैछ। एहि हेतु यदि एक-गामसँ नहि कार्य चलैत तँ आनो गाम मिला देल जाइछ।

पंचायतक प्रधान मुखिया होइ छथि। हुनकर चुनाव बालिग मताधिकारसँ होइछ। ग्रामकचहरिक लेल मुखियाक द्वारा 7 सँ 15 सदस्य धरिक एक समिति बनैछ। पंचायतमे निर्वाचित 15 सदस्यक एक ग्रामकचहरी रहैछ। बालिगमत द्वारा चुनल सरपंच ओकर इजलासक प्रधान होइछथि।

निर्वाचनक उपरान्त केओ सदस्य साधारणतया 3 वर्षधरि रहि सकै छथि। आवश्यकता पड़ने पंचायत बहुमतसँ एक विशेष सभा कए मुखियाकेँ हटा सकैछ। मुखियाक संग मुखियाक कार्यकारिणी समिति भंग होइछ। अतएव नव मुखिया कार्यकारिणी समिति बनबैछ।

ग्रामकचहरीमे मोकदमा दायर कएल जाइछ। दुनू पक्षक एक-एक पंचक समक्ष सरपंच ओकर सुनबाइ कए सकैछ। एहिमे दीवानी आ फौजदारी दुनू प्रकारक मोकदमाक सुनवाइ होइछ। फौजदारीक लेल तृतीय श्रेणीक मजिस्ट्रेटक अधिकार पंचायतकेँ भेटैछ। सए रुपैयाक मालियतक मोकदमाक निर्णयक अधिकार एकरा रहैछ। ग्रामकचहरीक कोनो निर्णयक विरुद्ध अपील होइछ मुदा पूर्ण इजलासमे, जाहिमे सरपंच, तथा पंच उपस्थित रहथि। एहि प्रकारक इजलासक निर्णय अंतिम निर्णय होइछ। मोकदमाक गड़बड़ी भेलापर जिला-जज, मुन्सिफ-मजिस्ट्रेट अथवा एस०डी०ओ० क ओतए अपील होइछ।

पंचायतक रक्षा आ लोक कल्याणक लेल रक्षादलक संगठन होइछ। ओकर प्रधान दलपति कहबै छथि। ग्रामसेवक आ दलपतिक प्रशिक्षण लेल सरकार दिशिसँ व्यवस्था होइछ।

पंचायतक कार्य दू प्रकारक होइछ-(अ) अनिवार्य कार्य, आ (आ) सरकारी आज्ञासँ भेनिहार कार्य।

स्वदेशप्रेम

प्रेममे एक अमोघ शक्ति छैक जे कोनहु व्यक्तिक कोनहु ठाम रहबाक हेतु प्रेरित करैछ आ आकृष्ट करैछ। ओहि स्थानसँ ओहि व्यक्तिकेँ प्रेम अवश्य भए जाइछ मुदा ओहिमे गंभीरता, स्वाभाविकता आ सरलताक अभाव भेटैछ। यावत्काल उद्देश्यपूर्ति होइछ अथवा जा धरि नव आवेश रहैछ ता धरि लोक नव संसारक नव स्वरूप देखि मन बहटारने रहैछ मुदा समय-समय पर ओकर मन विखिन्न भए उठैछ आ ओ निर्जन टापूमे बन्दी भेल अलेक्षेन्द्रक सदृश सोचय लगैछ-

Society, friendship and love
Divinely bestowed upon man,
Had I the wings of a dove
How soon would I taste you again!

वस्तुतः, मानवमन अपन जन्मभूमिक समाज, मैत्री आ प्रेमक लेल सदरिकाल लालायित रहैछ अतः जन्मभूमिक प्रति प्रेम थीक स्वदेशप्रेम।

स्वेदशक समता विदेश कहियो नहि कए सकैछ। केहनो सुख आ सुविधा लोककेँ अन्यत्र भेटैक मुदा अपना देश सन आन देश नहिये होइछ। ठीके कहल गेल अछि-"Home is a sweet, there is no place like home." एतबए नहि, कोनहु व्यक्तिक जीवनक विकासक आधार छथि माए आ मातृभूमि। हिनकहि लोकनिक संगति आ साहाय्य पाबि मनुष्य पालन-पोषण आ अपन जीवनक स्वरूपक निर्माण करैछ। अपन परिवार आ अपन देशक परम्परा एवं वातावरणक सहयोगसँ मानव-जीवनक ढ़ाँचा तैयार होइछ, रहन-सहन, चालि-ढ़ालि, बोली-बानी, भेष-भूषा आदि सबहिपर स्वदेशक छाप लागल रहैछ। यथार्थमे मनुष्य स्वदेशक महिमाक एक स्तम्भ बनि जाइछ। इएह कारण अछि जे 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहल गेल अछि।

स्वदेशक प्रेम स्वाभाविक अछि ओ कतहु नहि बदलल जा सकैछ। लोक कतहु जाए मुदा ओ संगहि लागल रहैछ, आ अवसर अएला पर प्रकट भए जाइछ। ठीके कहल गेल अछि-

"Breathes there the man with soul so dead,
who never to himself hath said,
This is my own, my native land,
When he puts his footsteps on the land."

निश्चय, बाल-बृद्ध, नर-नारी, विद्वान-मूर्ख सबहि व्यक्तिक हृदयमे स्वदेशक प्रेम उमड़ल रहैछ जे स्वदेशक स्थान, वस्तु आ व्यक्तिक दर्शनमात्रहिसँ बहए लगैछ। पशुपक्षीपर्यन्तमे एहि प्रेमक प्रगाढ़ता देखि पड़ैछ। हेराएल-ढेराएल पशु बोआइत-ढहनाइत अपना बथानपर आबिकए स्थिर होइछ। अपन खूटापर कुकुरो बली होइछ।

पक्षी दिनभरि विचरण करैछ मुदा संध्या होइतहि चन-चन -चुन-चुन-चें-चें करैत अपन खोंतामे आबिकए शान्त होइछ।

एकर आवश्यकता डेग-डेग पर देखि पड़ैछ। यदि स्वदेशक प्रति लोककेँ प्रेम नहि हो, त परदेशक प्रति प्रेम नहि भए सकैछ। कारण, 'Charity begins at home' एतबए नहि, यदि लोक अपना देशक प्रति प्रेम नहि राखए तऽ ओहि देशक उत्थान कथमपि सम्भव नहि होएत आ ओहि व्यक्तिकेँ जीवनमे उन्नति करबाक आधार नहि भेटतैक। उत्तर ध्रुव पर असह्य शीत पड़ैछ; परंच कतबो लोभ देखाकए ओहि क्षेत्रक निवासीकेँ गर्म देशमे आनल जएबाक प्रयास कएल जाए तऽ ओ नहि अओताह। सहारा मरुभूमिक निवासीकेँ लूमे झरकब श्रेयस्कर बूझि पड़ैत छनि। हिमालय पर रहनिहार आ छोटानागपुरक जंगलक निवासीकेँ अपन भूमिक प्रति अगाध प्रेम छनि। अत: ओ ओहि स्थानकेँ त्यागक हेतु कहियो नहि तैयार होएताह। ठीके कहल गेल अछि-

'जिसके न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नरपशु निरा है और मृतक समान है।'

स्वदेशप्रेमसँ लाभो बहुत होइछ। देशप्रेमीक समक्ष देशक उन्नति, सुरक्षा, यश आ प्रतिष्ठाक भावना प्रमुखरूपेँ उपस्थित रहैछ। अतएव ओहि व्यक्तिक हृदयसँ स्वार्थ, लोभ, वैमनस्य आ फूटक भाव उठि जाइछ। सबहक आगू देशक प्रश्न एकता, सहयोग आ सौहार्द उत्पन्न करैछ। एहिसँ देशक कार्यमे सुविधा आबि जाइछ। देशक हितसाधनसँ लोकक हित होइछ। अत: स्वदेशप्रेमसँ स्वार्थ आ परमार्थ दुनूक सिद्धि होइछ। स्वदेशक प्रेम लोककेँ आन देश आ राष्ट्रसँ बढ़ल-चढ़ल रहबाक लेल उत्साहित करैछ। लोक जी-जानसँ ओकर विकास आ अभ्युत्थानमे लागि जाइछ। स्वदेशप्रेमक फलस्वरूप भारतवासी आकाश-पातालक कुलेबा एकट्ठा कए शान्तिपूर्ण ढंगसँ अपहृत स्वतंत्रताकेँ प्राप्त कए मातृभूमिक लाली राखल अछि।

भारतक इतिहासमे स्वदेशप्रेमीक संख्या कम नहि देखि पड़ैछ। प्राचीन कालमे महाराणा प्रताप भेलाह जे मातृभूमि चित्तौड़क रक्षाहेतु राजपाट त्यागि कए जंगल, पहाड़ आ खोहक शरण धएल आ नेनाभूटकाकेँ घास-पातक रोटीपर्यन्त नहि भेटलापर सान्तवना आ ढाढस दए मातृभूमिक रक्षा लेल तत्पर राखल। छत्रपति शिवाजी अपन देशक प्रतिष्ठा राखए हेतु प्राणपणसँ प्रयास कएल। अर्वाचीन कालमे पंडित मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, पंडित जवाहर लाल आदिक स्वदेश प्रेम उल्लेखनीय अछि। वस्तुत:, स्वदेश प्रेमक बाढ़ि देशमे पसरि रहल अछि।

अत: स्पष्ट देखि पड़ैछ जे स्वदेशप्रेम सब तरहेँ आवश्यक, स्वाभाविक आ महत्त्वपूर्ण अछि। एहि प्रेमकेँ अक्षुण्ण बनाकए राखए हेतु देशवासीकेँ उद्यत रहब उचित अछि। एहि पुनीत कार्यलेल स्वार्थक त्याग करब सर्वथा उचित थीक। तन-मन-धन आ मनसा-वाचा-कर्मणा लागिकए स्वदेशप्रेमकेँ अपनाकए चलने देश थोड़हि दिनमे उन्नति कए सकैछ। संगहिसंग ओहि व्यक्तिसँ सावधान भए चलक चाही जे स्वदेशसेवाक पाखंड रचि अपन पाँचो आङुर घी मे रखै छथि।

परोपकार

परोपकारक अर्थ थीक अनकर उपकार। अपन उपकार सब चाहैछ आ करैछ, मुदा जाहि व्यक्तिसँ कोनो सम्बन्ध नहि हो ताहि व्यक्तिक उपकार वास्तविक उपकार थीक, यदि ओहिमे प्रत्युपकारक भावना नहि निहित हो। एहेन कार्य कएनिहार व्यक्ति होइछ दयालु, साहनुभूतिपूर्ण, स्नेही, उपकारी, अनकर दुःखकेँ बुझनिहार, परिस्थितिक ज्ञान रखनिहार, अतः विवेकी। अतः एहेन व्यक्तिक हृदयमे छल-कपट, द्वेष, डाह, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद आ मत्सरकेँ स्थान नहि भेटैछ। परोपकारी व्यक्तिक आत्मा पवित्र, शुद्ध आ उदार होइछ। अतएव ई परम धर्म मानल गेल अछि मुदा दोसराकेँ पीड़ा देब आ कष्ट पहुँचाएब अधर्म मानल गेल। एतय तुलसीदासक उक्ति देखए योग्य अछि-

परहित सरिस धर्म नहि भाई।

परपीड़ा सभ नहि अधमाई।।

इएह कारण अछि जे परोपकारी व्यक्ति संत थिकाह। तैँ तुलसीदासक कहने छथि-

पर उपकार बचन-मन-काया।

संत सहज सुभाव रघुराया।।

एहि दैवी गुणसँ विभूषित भेनिहार विरले व्यक्ति होइ छथि। अधिक लोकक लेल 'स्वार्थ मूलमन्त्रस्य परमार्थ सर्वनाशम्' अछि। कारण, आँखि अछैतहुँ ओ आन्हर होइ छथि, कान रहितहुँ बहिर एवं विवेक रहलो पर अविवेकी होइछथि।

परोपकारक महत्त्व महान् अछि। सर्वत्र एकर मान होइछ। परोपकारी व्यक्तिक उच्च रहैछ आ उपकृत व्यक्तिक मान होइछ। परोपकारी व्यक्तिक उच्च रहैछ आ व्यक्तिक कृतज्ञ रहैछ। ओहि व्यक्तिक वाणीमे जादू रहैछ जे सम्पर्कमे अएनिहार व्यक्तिकेँ सत्पथपर लए अबैछ। एकर महानता अपार आ असीम अछि। महान् दरिद्र व्यक्ति परोपकारक विभूतिसँ भूषित भए आदरणीय भए जाइछ मुदा धनसम्पन्न होइतहुँ परपीड़क निन्दा आ अपमानक पात्र भए जाइछ। वस्तुतः, परोपकार मनुष्य आ पशुमे अन्तर उपस्थित करैछ। इएह कारण अछि जे 'परोपकाराय सतां विभूतयः' कहल गेल अछि परोपकारक भावनाक उदय होइतहि स्वार्थक किला ढहि जाइछ आ परहितकामनाक कमनीय कानन जगमगा उठैछ। अपना लेल तऽ कुकुरो हरान होइछ मुदा अनका उपकारमे डूबल रहनिहार व्यक्तिकेँ अपन सुख आ शान्तिसँ हाथ धोबए पड़ैछ।

एहि महान धर्मक रूप विभिन्न अछि, अतः ओ देश, काल आ पात्रक अनुसार अपनाओल जाइछ। एहि हेतु बालक आ वृद्ध, पुरुष एवं स्त्री, धनी तथा निर्धन अपन शक्तिक अनुसार परोपकारक कोनहु रूपकेँ अपनाकए जीवन सार्थक करैछ। कोनहु दुखी व्यक्तिक दुःख दूर कए सुख पहुँचाएब परोपकार थीक। जाहि व्यक्तिकेँ सम्पत्ति नहि होइ ओहो

प्राणिमात्र पर दया देखाकए परोपकार कए सकैछ। सहानुभूति राखब सबकेँ सुलभ होइछ। पीड़ितक रक्षा करब, पतितक उद्धार करब, भूखलकेँ अन्न, पियासलकेँ पानि देब, नाङटकेँ वस्त्र देब, रोगीकेँ औषधि देब अस्वस्थ व्यक्तिक सेवा करब परोपकार थीक।

परोपकारक भावना केवल मनुष्येटामे नहि अछि, एकर पवित्र भाव प्रकृतिमे सबसँ स्पष्ट देखि पड़ैछ। रत्नागर्भा धरती सर्वसहा छथि, वृक्ष अपन पत्र, पुष्प, फल आ डारि सब किछु अनका लेल त्यागैछ, जल सब जीव-जन्तुक प्राणरक्षक भए जीवन कहबैछ, पशु भारवाहन कए परोपकार करैछ। पाथर टुकड़ा-टुकड़ा भइयो कए अपन परोपकारी स्वाभावकेँ नहि छोड़ैछ, सूर्य दिन-रात्रि चलैत छथि, आलोक पसारैत रहैत छथि,चन्द्रमा संसारभरिक व्यथाकेँ दूर करए हेतु आरामक समय उपस्थित भए पीयूषवर्षा कए सबके हृष्ट-पुष्ट बनौने रहैत छथि। मेघ भाफसँ जल लए जलराशिकेँ धारण कए अवनीक समीप आबि जल-वर्षा कए सबकेँ सानन्द बनबैछथि, नदी जलक भण्डारकेँ सुरक्षित राखि जीवजन्तुक पालन-पोषणमे सहायक होइछ, पर्वत अन्यदेशीय उपद्रवसँ रक्षा कए विविध भाँतिक कन्द-मूल-फल, जड़ी-बूटी आदि सामग्रीक उपहार उपस्थित कए परोपकारिताकेँ प्रकट करैत छथि। अतएव प्रकृतिक सब साधनमे परोपकारक भावना सन्निहित अछि।

परोपकारसँ लाभो बहुत होइछ। यदि लोक परोपकारी भए जाए तऽ समाजक आ राष्ट्रक महान् उपकार होएत। ओहिसँ मनुष्यक आत्मशुद्धि होइछ। एहेन व्यक्तिक आदर सर्वत्र होइछ। ओ व्यक्ति धर्मात्मा होइछ, कारण 'परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्' कहल गेल अछि।

परोपकारीक उदाहरण भारतक इतिहासमे भरल पड़ल अछि। राजा शिवि परबाक रक्षालेल अपन शरीरक मांस दान कएल, दधीचिक हड्डीसँ अस्त्र बनलापर वृत्रासुर राक्षसक नाश भेल। पन्ना अपन एकमात्र पुत्रक निर्मम हत्या देखिकए चुपचाप रहलि। महात्मा गाँधी समाज, देश एवं राष्ट्रक लेल अपन जीवनदान कएल आ जटायु सीताजीक रक्षा लेल राक्षस रावणक हाथ मृत्युक समीप पहुँचाओल गेल। वस्तुत:, परोपकारी व्यक्तिक आदर्शसँ लोक आइधरि जनैछ 'परोपकाराय सतां विभूतय:'।

अत: परोपकारी होएब एक महान् गुण थीक मुदा सम्बन्धी, स्वस्थ आ धनबानक परोपकार घातक होइछ। एहि हेतु उपयुक्त व्यक्तिक परोपकार महान् धर्म अछि। यथाशक्ति परोपकारी होएब सबहिकेँ उचित अछि।

□□□

स्वावलम्बन

सब मुनष्य स्वीकार करैछ जे मनुष्य अपन भाग्यक विधाता अपनहि अछि मुदा संगहिसंग प्रश्न उपस्थित होइछ कओन मनुष्य एहि तरहक अछि। मानए पड़त जे एहि श्रेणीक मनुष्य अपन पएरपर ठाढ़ रहि कए अपनहि भरो चलनिहार अपन गुणक विकासक संग बढ़निहार, जीवनपथ पर अग्रसर भए बाधा-विघ्नकेँ दूर करैत उन्नतिक शिख पर बढ़निहार आ अपना पर अवलम्बित रहनिहार होइछ। अत: स्वावलम्बन मनुष्यक उन्नतिक सोपान थीक।

एकर महत्त्व बड़ पैघ अछि। स्वावलम्बी मनुष्य अपन गुण, ज्ञान, शक्ति एवं स्थितिक अनुसार कार्य करैछ। एहिसँ ओकर साहस बढ़ैछ, गुणक विकास होइछ, शक्तिक अन्दाज लगैछ। फलत:, एहि श्रेणीक व्यक्तिकेँ पाबि जाति आ समाज उन्नति दिशि अग्रसर होइछ। परावलम्बी भेलासँ मनुष्यक जीवन शक्तिहीन भए शिथिल आ असहाय भए जाइछ।

स्वावलम्बी होएब मनुष्यक लेल बड़ आवश्यक अछि। बढ़ियासँ बढ़िया नियम-कानून आ उत्तमसँ उत्तम संस्था मनुष्यक उन्नतिलेल यथार्थ सहायता नहि दए सकैछ। ओहिसँ केवल कार्य करबाक स्वतन्त्रता भेटि सकैछ मुदा सुस्तकेँ उद्योगी, फिजूलखर्चीकेँ, मितव्ययी आ मद्यपकेँ संयमी बनएबाक शक्ति छैक स्वावलम्बी मनुष्यक अभ्यास आ आचरणमे। वस्तुत:, ओ मानव-जीवनक हेतु अमृत थीक। एतबए नहि, ईश्वर ओहि व्यक्तिक सहायता करैत छथिन्ह जे अपन सहायता अपनहि करैछ। एक कवि कहने छथि-

To trust to the world is to build on sand,
I trust in God and my good right hand\.

स्मरण राखब उचित अछि जे देशक उन्नतिलेल बनल नवीन योजनामे पूर्ण सफलता नहि होएबाक कारण अछि परावलम्बन अन्यथा आत्मनिर्भर रहने देश ओतवे पएर पसारैत जतबा पैघ ओछाओन रहितैक। एहि हेतु स्वावलम्बी होएब सबहक लेल आवश्यक अछि।

प्रकृति स्वावलम्बनक महान् शिक्षक अछि। समय पर गर्मी होइछ, जाड़ लगैछ वर्षा होइछ, पाला पड़ैछ, आम मजरैछ, पतझड़ होइछ आ पल्लव पनपैछ यद्यपि बाह्य कारण ओकर संग नहि दैछ। पशु पियासे लगने डकरण लगैछ आ भूख लगने डोरी हनए लगैछ, पक्षी खढ़, पात, घास, लत्ता आदि सामान चुनिकए खोँता बना लैछ, जंगली जानवर भूख लगला पर शिकारक टोहमे अपन स्थानसँ बाहर अबैछ आ भूखक ज्वालाकेँ शान्त करैछ तथा कीड़ा-मकोड़ा सब जीव अपन जीविकाक हेतु अपन पएर पर ठाढ़ि रहि स्वावलम्बनक शिक्षा दैछ।

स्वावलम्बन बड़ लाभदायक अछि। स्वावलम्बी व्यक्तिकेँ अपन साधन, सामर्थ्य आ स्थितिक ज्ञान रहैछ। फलत:, कोनहु कार्यमे सफलता पएबामे ओकरा सहायता भेटैछ। एहिसँ ओ अपन तथा जातीय उन्नति करबामे समर्थ होइछ। कारण, The worth of a state, in the long run, is the worth of the individual composing it.-

J.S. Mill स्वावलम्बी व्यक्तिकेँ अनकर एहसान नहि मानए पड़ैछ। अत: असफलता भेलापर ओ ओकर कारण ताकि कए निराकरण करैछ आ असफलता प्राप्त करैछ। ओ सर्वदा सुखी रहैछ आ ओकर जीवन शान्त रहैछ। ओहि व्यक्तिक हृदयसँ शिथिलता, कायरता, अकर्मण्यता, अधीरता आ असत्यभाषिता पड़ा जाइछ तथा ओहि स्थानमे कर्मठता, दृढ़ता, धैर्य, सत्यता, प्रेम आदि उत्कृष्ट गुणक विकास होइछ। एहिसँ समाज देश आ राष्ट्रक हित होइछ। जाहिसँ देशमे नेता, सुधारक, विद्वान, नीतिज्ञ, वैज्ञानिक आदि महान् पुरुषक उदय होइछ।

इतिहासक पन्ना उकटितहि देखि पड़त जे महान् व्यक्ति सब स्वावलम्बी छलाह। कालिदास, तुलसीदास, शेक्सपियर, न्यूटन, जगदीशचन्द्र बोस, रामानन्द, चैतन्य, महात्मा गाँधी, हिटलर, मुसोलिनी आदि सबहि स्वालम्बनक ज्वलन्त उदाहरण छथि।

अत: स्पष्ट अछि जे व्यक्ति, समजा आ देशक हेतु आलस्य आ भाग्यवादिता अनुचित अछि मुदा श्रम, उद्योग आ अध्यवसायकेँ अपनाएब आवश्यक अछि। यशस्वी एवं प्रतापी बनबाक मूलमन्त्र स्वावलम्बनकेँ सबहि व्यक्ति अपन अभ्यास, आचरण आ कर्त्तव्य द्वारा अपना सकैछ। अत: जीवन सफल बनएबाक लेल उन्नतिक प्रथम सोपान स्वावलम्बनकेँ अपनाएब सबहक प्रथम कर्त्तव्य थीक।

□□□